पँचमेर

पँचमेर

कहानीकार
डॉ. अमरेन्द्र

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८-८१-९६१४४६-२-३

प्रथम संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ रूपये मात्र

Panchmer (Stories)
Dr. Amrendra Rs.100/-

दिव्यांशु, आद्या, आराध्या,
ज्योति, अक्षय अशेष
आरो दुनियाँ भर के बच्चा-बुतरू वास्तें
ई कथापोथी!

—अमरेन्द्र

हेना कें ई संग्रह पूरा होलै

ठीक बारह साल पहिलकों बात छेकै, हमरा एक महत्वपूर्ण ग्रंथ लेली आधुनिक अंगिका बालसाहित्य पर एक लेख लिखना छेलै आरो जबें देखलियै, कि आरो-आरो गद्य विधा में तें कुछ-नें-कुछ छेवे करै, मतुर बाल-कहानी एकदम खाली, तें तुरत हम्में एकटा कहानी लिखलियै, मतर एक कहानी सें होयवाला की छेलै । तें आरो कुछ मित्र सें लिखवैलियै। हुनी लिखियो देलकै आरो चंद्रप्रकाश जगप्रिय के संपादन में संकलन निकलियो गेलै। ई बात बीस सौ दस ई. के छेकै। मतर बाल-कहानी के कमी के बात मनों में खटकते रहलै। हमरों बाल नाटक आरो काव्य-नाटक के दू संग्रह निकली चुकलों छेलै 'पंचगव्य' आरो 'पंचामृत'; सोचलियै, जों पाँच बाल-कहानी के एक संग्रहो निकली जाय, तें अच्छा। तखनिये संकलन के एक टा शीर्षको मनों में उपटी ऐलै 'पँचमेर'। पंचामृत नाँखी शीर्षक मिललै, तें कहानियो उतरें लगलै। ई कहानी आवी रहलों छेलै, बच्चाहै सिनी के बीचों सें। कुछ बात छुवी जाय, तें वैपर कहानी बनी जाय। ई पाँचो कहानी में एक तें बीस सौ दस ई. में ही लिखलों गेलों छेकै, बाकी तीन 'ठेठी के ठाठ', 'तिनकौड़िया' आरो 'अड़हुल बाबू के मास्टरी' ओकरों बाद के लिखलों छेकै यानी बीस सौ बीस के पहिलकों। जाहिर छै आरो-आरो काम कें निपटाय में हुन्नें सें ध्याने हटी गेलै, तें हटिये गेलै आरो एक दिन जबें पुरानों फाइल खोजै में ऊ सब बाल-कहानी मिललै, तें एक कहानी आरो पूरा करलियै यानी 'दंड' कहानी। ई कहानी बीस सौ तैइस के जनवरी में लिखलकों छेकै।

'पँचमेर' निकालै के सपना जे सालो पहिलें देखलें छेलियै, पूरा होय गेलै। आबें एकरा छपै लें भेजी रहलों छियै। कत्तो देर होतै, आषाढ़ तक तें छपी कें आविये जैतै। वर्षा के पहिलों पानी लें, जे बैशाख-जेठ के रौद सहै लें पड़ें, तें हरजे की छै।

—अमरेन्द्र

१ बैशाख २०२३

सम्पर्क : लाल खां दरगाह लेन
सराय, भागलपुर, बिहार, पिन-८१२००२
मोबाइल :-८३४०६५०६७९, ९९३९४५१३२३

कौंन कहानी? कहाँ

- ईमानदारी रौं फौंल ९
- ठेठी रौं ठाठ १५
- तिनकौड़िया ३०
- अड़हुल बाबू रौं मास्टरी ४४
- दंड ५५

ईमानदारी रों फोंल

उड़न्ती वक्ती बसुआँ आपनो सबटा किताब, कॉपी, कलम आरो सबटा कपड़ो-लत्ता समेटी लेलकै। किताबे की छेलै, 'हिन्दी अक्षर बोध' आरो 'हिन्दी गिनतीमाला'। कॉपी तें एक्के छेलै, जेकरा पर बसुआँ कभियो-काल रेटों सें लिखै छेलै आरो लिखी कें बाद में रब्बड़ सें मिटाय दै छेलै। रब्बड़ सें है रं रगड़ला के कारण जबें एक पन्ना फाटी जाय, तें दोसरा पर लिखना शुरू करै। यही सें ओकरों कॉपी कुकरयैलों, सुक्खा पत्ता नाँखि भै गेलों छेलै। तहियो उड़न्ती वक्ती वैं आपनों ऊ कॉपी लै लें नै भुललों छेलै।

वैनें दहरों कमीज आरो भाँगलों पैंट के बीचों में किताब-पेन्सिल दबैनें छेलै आरों भोर हुऐ के पहिले लगें उड़ौन दै देलें छेलै। एकदम खेते-खेत। आर छड़पै वक्ती एक दाफी ओकरों गोड़ लपटइयो गेलों छेलै, तें ऊ मुँहे भर आरी के दूसरा दिस धड़ाम-सना गिरी पड़लै। कपड़ा में लपैटलों किताब, कॉपी, रेट सब गज भरी आगू फेंकाय गेलों छेलै मतरकि ऊ धड़फड़ैले उठले आरों ठेहुना, तरउत्थी के धुरदा झाड़ी-पोंछी किताब, कॉपी, रेट उठैलकै आरो फेनु वहें रं झबझब कपड़ा में सब कुछ लपेटी दरबनिया दै देलकै। भर दिन तक ऊ भूखलों-पियासलों भागथैं रहलों छेलै।

ओकरों खोजो करैवाला के छेलै! अनाथालय में होन्ही के के केकरा पूछेवाला छेलै। जे अनाथालय कें देखैवाला छेलै, वहू एकदम राकसे छेलै। कोय-न-कोय बहाना सें बच्चा-बुतरु कें पीटथै रहै। ठीक एक दिन पहिलै बसुआ कें बस यही बातों पर धुनांठी देलें छेलै, कि

सांझकीये वक्ती ऊ झुपनियाबें लगलों छेलै।

भागतें-भागतें जखनी ऊ शहर पहुँचलों छेले, साँझ होयवाला छेलै। भूख-पियासों सें तें ओकरों देह-हाथ में जेना कोय जाने नै रही गेलों छेलै मतरकि ओकरा ई बातों सें ज्यादा चिंता ई बातों के छेलै कि रात खसला पर ऊ रहतै कहाँ ? ई नया शहर में ओकरा कोय धरमशाला आरनी के ठौर-ठिकानो तें मालूम नै छेलै, जहाँ ऊ रहतियै। कि तखिनये ओकरों मनों में नै जानौं की होलै कि ऊ एक चाय-दुकानी लुग खाड़ों होय गेलै। खाड़ों होलै, तें खड़े रहलै। कभी ग्राहक कें चाय पीतें देखै, तें कभी दुकानदार कें। चूंकि अनाथालय के मालिक ओकरा सिनी कें हफ्ते-हफ्ते लोगों सें दान पावै लेली गाँव-गाँव घुमवाय छेलै, से बसुआ के मांगै के तें आदत छैवे करलै। कुछ देर खड़ा रहला के बाद वैं दुकानदार के आगू हाथ फैलाय देलकै। एक हाथ के पाँचो अंगुली समेटतें मुहों दिस लै गेलै और इशारा सें खाय लें माँगलकै।

आबें ठीक सें चायवाला के नजर बसुआ दिस गेलै। हेना वैं रोजे हेनों लड़का कें दुकानी लुग आवी कें कुछ खाय लें माँगतें देखै छै, मतर बसुआ के हाथों में किताब-कॉपी देखी कें आय ओकरा कुछ दोसरे रं लगलों छेलै। वैं बिस्कुटवाला बुइय्यम खोली कें दू ठो बिस्कुट निकाललें छेलै आरो ओकरों दिस बढ़ाय देलें छेलै।

बसुआ के भूखे कुछ हेनों छेलै, कि वैं एक्के दाफी दोनों बिस्कुट कें मुँहों में राखी लेलकै, तखनी वैं किताब-कॉपी कॉखी में दबैनें दोनों हाथों कें मुँहों के नीचें ई किसिम सें दोना-रं बनाय लेलें छेलै कि बिस्कुट के एक्को चूर नीचें नै गिरें। ई बात के तरफ चायवालाहौ के नजर गेलों छेलै। वैं समझी लेलकै कि ऊ बहुत भुखैलौ छै। ओकरा अनचोके तरस आवी गेलै, तें दू टा बिस्कुट आरो ओकरों दिस बढ़ाय देलकै। बसुआ के खुशी आँखी में उतरी गेलों छेलै।

ओकरा कटियो-टा उम्मीदो नै छेलै कि कोय ओकरा ई रं मंगनी में बिस्कुट खिलैतै। खैथै-खैथै वैं सोचलके "जे जुट्ठों गिलास चायवाला काका अपनों हाथ सें धोय-धोय कें सामने राखै छै, ऊ सब जों हम्मी

धोय-धाय कें राखी दौं, तें एकरों बादो में कुछ मिलें सकें छें।''

यही सोची कें बसुआ अपनों कॉपी-किताब आरो पिन्हलों, चपोतलों कपड़ा पहिलें अपनों पिन्हलका पैंटों के दायां-बायां में खोसी लेलकै आरो जुट्ठों चायवाला गिलास कें धोय-धोय चायवाला के लुग राखें लगलै।

ओकरा ई काम करै में कोय दिक्कतो नै होलै। अनाथालयो में तें कोय-न-कोय लड़का पारी पड़ला पर बर्त्तन-बासन धोवे करै छेलै। वहूं धोय छेलै।

बसुआ के ई सहयोग सें चायवाला एकदम गदगदाय गेलै। मिण्टे में ओकरों दुकानी पर ग्राहक के भीड़ बढ़ी गेलै। असल में ऊ चाय के दुकान खलीफाबाग के नामी दुकान छेलै। बड़का केटली के गरम पानी में चाय के पत्ती खौलतें रहै, आगू में पच्चीसो कप धरलों होलों। चाय मांगैवाला पैसा निकाली-निकाली माँगतें रहै मतरकि चाय बनैवों, फेनु कप्पो धोवै के झमेला। देरी देखी, ग्राहक सिनी ओकताय कें चली दै आरो जबें बसुआं कप धोना शुरू करी देलकै, तें बाते उलटी गेलै।

खलीफाबाग के ऊ चाय दुकान तभिये बंद होय छेलै, जबें ऊ चौक के सब्भे दुकान बंद होय जाय।

जखनी दुकान समेटै के समय होलै, तबें चायवालां बसुआ सें एकेक करी कें बात पूछना शुरू करलकै; जेना, ''ओकरों की नाम छेकै, ओकरों माय-बाबू के छेकै, ऊ कौन गाँव के छेकै, की घरों सें भागी कें ऐलों छै आरनी, आरनी ?''

बसुऔं कोय बात नै छिपैलें छेलै। एकेक करी कें सबटा सच-सच बताय देलें छेलै; ''हमरों नाम बासु छेकै, हमरा माय-बाबू नै छै, दोनो मरी गेलों छै, हम्में नै जानें छियें कि हम्में कोंन गाँव के छेकियै, अनाथालय सें भागी कें ऐलों छियै, कैन्हेंकि ओकरों मालिक बच्चा सिनी कें जबें डंगाय छै, तें तब तांय, कि जब तांय लड़का सिटपिटाय नै जाय। परसु हमरो खूब डंगेलें छै'' आरो आखरी बात कहथैं वैं अपनों कमीज पीठ-ओटी सें ऊपर करी देलकै।

पीठी में ठिक्के कारों-कारों निशान पड़ी गेलों छेलै। चायवाला कें तरस आवी गेलें, से वैं कहलकै, "आबें रात कें कहाँ जैवे, यही ठियां सुती रहें; यही पिण्डा पर। कत्तें आदमी तें सब्भे के दुकानी के पिण्डाहै पर सुतलों रहै छै। डोंर-भय के कोय बात नै छै। ई बोरा बिछले छौ, एकरे पर सुती रहियें।" ई कही कें चायवाला दुकान बंद करी अपनों घोंर दिस सिधियाय गेलै। वहाँ सें ओकरों घोंर कोस भरी दूर छेलै, तिलकामांझी में, से ऊ वहाँ सें झवझव निकललों चललों गेलै। जैतें-जैतें वै चार बिस्कुट आरो ओकरा थमाय दैलें छेलै।

बसुआ कुछ देर लेली होने ठकमकेलों खाड़ों रहलै, फेनु छोटों-रं चौकी पर जाय बैठलै, जे चायवाला कें बैठे आरो कप, चाय, चीनी रक्खै के जग्धों छेलै। वहां आबें कछुवे ने, खाली चौकी पर तहैलों बोरिया बिछलों छेलै, जे फैलैला पर सौंसे चौकी जरूरे घेरी लेतियै।

ऊ थक्की कें चूर तें होय्ये गेलों छेलै। कुछ-कुछ पेटो भरिये गेलों छेलै, से पिण्डानुमा चौकी पर गोड़ पसारवे अच्छा बुझलकै। चौकी पर बैठतें वैं पैण्टों में खोसलों कॉपी, किताब, कपड़ा निकाललकै आरो तहैलों बोरा पर गोड़ पसारै के मनसुआ बनावें लागलै। यहू सोचलकै कि बोरिया के नीचें कपड़ा, किताब राखी कें ओकरौ तकिया बनाय लौं, कोय खींचते, तै तुरंत्ते नींद चाँक होय जैतै। यही सोची कें वैं जेन्है कें तहैलों बोरिया के ऊपरी हिस्सा उठैलकै, कि आँख फाटी कें रही गेलै।

"लागै छै, जाय वक्ती चायवाला काका टका समैटे लें भुलाय गेले।" वैं मनेमन सोचलकै । वैं ई तें देखलें छेलै कि चायवाला ग्राहक सें पैसा लेलें जाय आरो ऊ सब तहैलों बोरिया के नीचें राखलें जाय। ढेर खुदरैया होला पर ओकरा बाहर राखी लै, आरो टाका सिनी कें बोरिया के भीतरे रहें दै।

वैं फटलों आँखी सें देखलकै; दू-तीन सौ से कम नै होतै एकटकिया। वैं बोरिया कें आरो ऊपर उठाय देखलकै। नया-पुरानों किसिम के एकटकिया, पंचटकिया, दसटकिया, एक-दूसरा पर चपैलों पड़लों छेलै। ओकरा हठाते जेना कँपकँपी लागी गेलों रहें। वैं झट सना

बोरिया होन्है कें राखी देलकै आरों चुकुमुकु बोरिया पर जाय बैठलै, अपनों दोनो हाथों के गोलाई में दोनों ठेहुना बांधतें। फेनु की सोचलकै कि कुकड़ियाय कें ऊ बोरिया पर ओघराय रहलै, जैसें कि कोय कुछ शंका नै करें।

ओघराय वक्ती बसुआ ई बात के ख्याल करिये कें लेटलै कि ओकरों देहों के भार टाकावाला हिस्सै पर पड़ें। मतरकि ओकरों आँखी सें नीन तें जना उड़ी चुकलों छेलै। ओकरों आँखी में थकियैलों टाका के फोटो छेलै आरो दिमाग में डोंर-पर-डोंर।

ओकरा याद आबी रहलों छेलै—ऊ दिन, जबें वैं अनाथालय के नगीच कैलू बाबा के दुकान सें अपनों साथी संठिया कें गुल्ली चोराय सें मना करलें छेलै, मतरकि संठियां नै मानलें छेलै आरो खुल्ला डिब्बा सें गुल्ली निकालै के कोशिश जेन्हैं करलें छेलै कि गुल्ली खनखनाय गेलै; फेनु तें कैलू बाबां हाथ धरले लै गेलों छेलै, अनाथालय के मालिक चाचा के नगीच; सब बात बताय भर के देर छेलै कि संठिया के पीठी-माथा पर धौल ताड़ोंफल नांखी लदलद गिरें लगलों छेलै।

बसुआ एकदाफी ओघरैले-आघरैले कॉपी उठलै। सोचलकै, "जों, कोय आबिये जाय आरो ओकरा उठाय कें सबटो टाका हसोती चली दै, तबें तें चायवाला काका यहें नी बुझतै कि हम्मी सब टाका चोरैलें छियै. ..मतरकि केना बुझतै, हम्में अपनो सबटा जेब देखाय देवै....मतर देखैला सें की; चायवाला काकां यहू तें कहें पारें कि हम्में टाका कहीं नुकाय कें राखी देलै छियै।" ई बात सोचत्हैं, वैं बोरिया कें कस्सी कें धरी लेलकै, कि कोय बोरिया लैकें भागें नै पारें।

बसुआ कें कुछ पतो नै चललै कि कखनी भोरकबा होलै आरो आदमी के ऐबों-जैवों शुरू होय गैलों छै। गीत गैतें गंगलहैनियो सनी के ऐवों-जेवों शुरू होय गेलों छेलै। ओकरों जानों में जान ऐलों छेलै। ऊ बोरिया पर चुकुमुकु बैठी गेलों छेलै।

आदमी के ऐवों-जेवों बढ़ें लगलों छेलै। अभी फरचों हुवै में देरे रहै कि खलीफाबाग चौक गनगनावें लगलों छेलै। कि तभिये ओकरों

ध्यान मलकी-मलकी कें ऐतें चायवाला पर पड़लै। जबें एकदम नगीच आवी गेलै, तें बसुआ उठी कें नीचें उतरी गेलै।

"अरे, तोहें सुतलैं नै, नींद नै ऐलौ की ? यै ठां डोंर के तें कोय बाते नै छेलै।" चायवालां दुलार दिखैतें कहलें छेलै।

"नै काका, डोंर के बात नै छै। तोहें जाय वक्ती बोरिया सें टाका निकालै लें भूली गेलौ।"

बसुआ के एतना बोलथैं चायवाला के करैजों धक-सना रही गेलों छेलै। वैं हड़बड़ेलें अपना जेबी में हाथ डालने छेलै। वहाँ टाका नै पावी कें सीधे बोरिया दिस झुकलों छेलै। एक तह उठैलकै। टाका सिनी देखी कें बसुआ दिस देखलें छेलै। अपनों दिस चायवाला कें देखतें देखी कें बसुआं कहलकै, "जों हम्में सुती रहतियै, काका आरो कोय एत्तें-एत्तें टाका लैकें भागी जैतियै, तबें!"

"अगर लै कें भागी जैतियै, तें हमरा कोय दुख नै होतियै। हमरा तोरों-रं बेटा पावै लें जो जिनगी भर के कमाय भी गंवाबै लें पड़ें तें गंवाय देवै।" कहतें-कहतें चायवाला के आँख लोराय गेलों छेलै आरो ओकरा गोदी में उठाय कें माथों चूमी लेलें छेलै। चायवाला के ऊ रं दुलार पावी कें तें बसुआ कमलों के फूल नाँखी खिली गेलै।

ई कहानी आय सें बीस साल पहिलकों छेकै। जहाँ पर चाय के दुकान छेलै, वही ठां अंग्रेजी किसिम हॉटल छै आरो बसुआ एकरों मालिक छेकै। आबें बसुआ बासुदेव बाबू बनी गेलों छै। ओकरों होटल के दीवारी पर लिखलों छै, 'कर्म आरो ईमानदारी की नै करें पारें।'

■

ठेठी रौं ठाठ

पता नै, के ऊ गाँव के हेनों नाम रखी गेलों छै—अधकपारी अघोरी । हों, यहा नाम ऊ गाँव के छेकै । कभियो यही गाँव के बीचो-बीच एक नद्दी बहै छेलै—छटपटिया । धीरें-धीरें वहाँकरों नद्दी की सुखलै, कि नद्दी पर ऊ अघोरी बाबा के झोपड़ीयो बनी गेलै, रातो रात । साँझ तांय तें कोय्यों कुछ नै वहाँ देखलें छेलै; भोरे देखै छै, तें बाँसों के दीवारी पर डमोलों के छतवाला झोपड़ी तनी कें खाड़ों छै, झोपड़ी हेनों कि चारो दिस सें उदामों । गाँमों के कोय भी बच्चा-बुतरु हुन्नें जाय, तें झोपड़ी कें ताकथैं आरो जों कटियो-टा रुकै, तें अघोरी ओकरों दिस लम्बा त्रिशूल लैकें झपटै। यही बात जबें गाँव के पुबारी टोला के बलेश्वर आ बमबम साथें होलें आरो दोनो हाँफलों-धाँपलों, काँपतें-कुपतें आवी रहलों छेलै, तें भुवनेश्वर काका रस्ताहै में मिली गेलै। कानै के कारण जबें बलेश्वर बतैलकै, तें हुनकों गुस्सा सीधे मगजों पर चढ़ी गेलै ।

यही बात जों हुनको बेटा बमबम बतैतियै, तें हुनका गुस्सो नै ऐतियै, कैन्हें कि हुनी मनेमन मानी लेतियै—जरूर यही छौड़ां शैतानी करलें होतै, तभिये अघोरीं त्रिशूल लैकें दौड़लें होतै । मतर है बात चूंकि बलेश्वरें कहलें छेलै आरो ओकरों बातों पर विश्वास नै करै के कोय बाते नै छेलै, तें हुनकों गुस्सा में उबाल ऐवों लाजिमे रहै। फेनु की छेलै, हुनी घोंर ऐलै आरो अपनों पंचहत्था डांग लेले सीधे नद्दी दिस झपटलों चली देलकै ।

हुन्नें जबें अघोरी बाबां दूरहै से हुनका हाथों में डांग लेलें

झपटतें देखलकै, तें मामला समझै में हुनका देरो नै लगलै । बस त्रिशूल छोड़िये-छाड़ी, मूड़ी गाँतलें निसुआड़ी गाछों के जंगल में नुकाय गेलै आरो वही राते कहाँ बिलाय गेले, कोय जान्हौ नै पारलकै ।

बाद में बलेश्वर कें तें भुवनेश्वर काकां कुछ नै कहलकै, मतर बमबम कें कहै में कोय कोर-कसर नै रखलकै । खाली पीटलकै नै, कैन्हेंकि पिटावै के पहले ऊ एत्है जोर सें हँकरें लगै, कि दस घोंर के आदमी जुटी जाय पड़ें आरो ऊ पिटै सें बची जाय छेलै; से भुवनेश्वर काकां ओकरा पिटवे नै करैं ।

तें, है बात नै कि बलेश्वर-बमबम ई दोनो नाम ओकरों माइये-बापें रखलें छेलै, नाम तें रखलें छेलै गामेवालां, कैन्हें कि बमबम सुडोल देह के कारण मटकी-मटकी कें चलै, तें ओकरों नाम बमबम होय गेलै, मतर बालेश्वर देह सें भले चिगड़गड़ों रहें, मतर ताकत सें कम बरियों नै छेलै, तें गाँव में ऊ बलेश्वर, फेनु बलेसर नाम सें जानलों जाय आरो धीरें-धीरें दोनो नाम हेनों मुँहों पर चढ़लै कि कोय्यो बमबम कें नै तें त्रियंबक बोलै आरो नै बलेश्वर कें त्रिपिटक बोलै लें तैयार छेलै; सब्भे बोलै—हेनों बिचकाठों नाम नै बोललों जाबें सकै। एक दाफी अमोलिया जरूरे टुनटुन सें पुछले छेलै, "सुनै छियै, बलेसर के असली नाम त्रिपिटक छेकै । अरे एकरों अरथ की भेलै ?" तें, टुनटुन माथों लगैतें कहलें छै, "ई जरूरे गुरुजी सें तीन दाफी पिटैलों होतै, तही सें ई नाम गुरुवेजीं देलें होतै । टुनटुन के ई बात जबें बालेश्वर कें मालूम होलै, तें वहू पहिलकों नाम सें चिढ़ै । से आबें दोनो के नाम स्थाई रूपों सें बलेश्वर आरो बमबम पड़ी गेलों छै ।

तें मिलता-जुलता नामे-रं ई दोनो के उमिरो, कुछ-कुछ कद-काठियो मिलता-जुलता छेलै, फेनु दोस्तीयो होने मजबूत । मतर दोनो में एक फरको छेलै—बलेश्वर छेलै—दुखहरण बाबू के छोटका लड़का आरो बमबम—हुनके यहाँ, हुनकों घोंर-गृहस्थी के बाहरी काम देखैवाला भुवनेश्वर पहलवान के एकलौता बेटा । भुवनेश्वर पहलवान कें सब भुनेसर काकाहै कहै । भुवनेश्वर काका तें कम्मे।

बलेश्वर शहर के कोय अंग्रेजी इस्कूलों में पढ़ै छेलै, पाँच दिन तें शहरे में रहै, शनिच्चर के घोंर आवै, तें सोमवारे कें विहनकीये बेरा में निकली पड़ै ताकि इस्कूल लगै के पहले वहाँ पहुँची जाय । इस्कूल में जे पढ़ै छेलै, से तें पढ़बे करै, ओकरा वास्ते अलग सें एक गुरुओ रखलों गेलों छेलै, जे अपनों रूटीन मोताबिक पढ़ाय जाय । यहाँ तक कि जबें शनिवार के घोंर आवै, तें एक-दू दिनों वास्तें दुखहरण बाबूं नें गाँव के ही सबसे तेज छवारिक कें ओकरा पढ़ाय वास्तें ठीक करी लेलें छेलै ।

भुवनेश्वर काका के इच्छा तें हुवै कि वहूं बमबम कें बलेसरे हेनों कोय अच्छा इस्कुली में दै दै, मतर ओकरों सोभावे देखी कें अपनों विचार बदली लै । सोचै—मानी ला, दुखहरण बाबू ओकरा पैसा-पैरवी सें मददो करी दै छै, मतुर जेन्हों बमबम के रवैया छै, जों कहीं इस्कूली में पहिले दाफी लटकी जाय, तबें ? आरो ई लखेड़ा निश्चिते लटकी जैतै; तखनी तें पैसो जैतै आरो माथा पर कर्जा अलग सें—सें भुवनेश्वर काकां कभियो बमबम कें अच्छा इस्कूल भेजै के सपनाहै नै देखै, ओरी में कुछ दिन देखलें छेलै, बस वहा ।

ई बात हुनी कै दाफी अपनी जनानियो सें बोली चुकलों छै, "माय के बातों के असर संतानों पर बेसी होय छै, तोहीं समझाय कें देखौ, जों सुधरी जाय, तें सोना में सुगंध ।" हुनकों कहला पर मइयों कै दाफी, ओकरा समझैलें छेलै, मतर सब पथरों पर जोंल ।

आरो जबें भुवनेश्वर काका कें बमबम के मोंन मालूम होलों छेलै, तें हुनी कहलें छेलै, "ऊ नै पढ़ै लें चाहै छै, तें नै, मतर वैं बलेसर के समय तें बर्बाद नै करौ ! संझकी वक्ती एत्तें देर ओकरा सें बतियावै के की जरूरत छै; ऊ तें ओकरों पढ़ै-लिखै के वक्त हुऐ छै । आबें दुखहरण बाबू ई लैकें हमरा कुछ नै बोलै छै, तें एकरों की मतलब, कि हमरौ सिनी एकरा नै समझावौं । दिन भरी कबड्डी, लूडो, शतरंज में जमले रहै छै, तें रहौक । कम-से-कम बलेसर के समय के तें खयाल रखौक । ई ठेठी कें जे गुलेलबाज आरो पुल्लीडंडाबाज बनना छै—बनौक

हिनी की सोचै छै, ठेठीयो सें ठाठ जमैवाला छै! अरे ऊ तें अंगरेजीये सें जमै छै। हमरे जिनगी भर, फेनु अपने बुझतात कि ठेठी सें ढिन्नों भरवों कत्तें मुश्किल छै, जेन्हों समय आवी रहलों छै आरो अंग्रेजी के ए भी बोलै के लूर छै, एकरा ?''

जबें बाबू रों यही बात मांय बमबम कें हू-ब-हू सुनैलें छेलै, तें वहा दिनों सें ऊ बलेसर सें दूरे रहै के कोशिश करै । गाँव के जोंन शिवालयवाला बोंर गाछी के नीचू दोनों एकदम निश्चित समय में मिलै, ऊ वक्ती आबें कभिये-कभार बमबम आवै, तें बालेश्वर बड़ी बेचैन होय जाय । ''आखिर हेनों होय रहलों छै कैन्हें ?'' मनेमन सोचै । यहू सोचै, ''कहीं हम्में अनजाने में कुछ कही तें नै देलियै'' आरो ई सोचथैं ऊ एक दिन भुवनेश्वर काका के यहाँ पहुँची गेलै । तखनी हुनी ऐंगनाहै में बैठलों खाड़ों-खाड़ों रस्सी बाँटी रहलों छेलै । कि बलेश्वर के ऐंगनों ढुकथैं बोली पड़लै, ''आवों, आवों बेटा, हमरों बुलाहट छै की ?''

''नै काका, नै । असल में कल्हे सें बमबम कें नै देखी रहलों छियै । गाँमों में नै छै की ? बाहर गेलों छै की ?''

''नै-नै, छै तें यहीं ।''

''तें, हमरा सें मिलै लें नै छै, कल्हो हुन्नें इनारा दिस नै ऐलै, अइयो नै ऐलै, तें पूछै लें आवी गेलियै ।''

''आवी गेला, तें अच्छे करला, कभियो-कभियो हेन्हों कें आवी गेलों करों । तोरा सिनी हेनों सुपुत्र घरों में आबै छौ, तें लागै छै—जेना ज्ञान, रूप धरी कें उतरी गेलों रहें । हेनों ज्ञान की सब्भे कें हासिल होय छै, जेकरों माथा पर सरस्वती माय हाथ रखै छै, वही हेनों विद्वान हुऍ पारें। सब्भे की हेनों फर्राटेदार अंग्रेजी बोलें पारै छै, बेटा!''

''काका, हेनों कुछ बात नै छै, ज्ञान हासिल करवों तें अभ्यास आरो लगन पर निर्भर करै छै । कोय हिन्नै मोंन लगैतै आरो मेहनत करतै, तें ऊ हमरौ सें बेसी पढ़लों-लिखलों होतै । यैमें कोय चमत्कार के बात थोड़े छै ।''

''छै; छै कैन्हें नी । जों हेनों नै होतियै, तें बमबमो नै

पढ़ी-लिखी लेतियै ! मेहनतो करवों की सबके बस के बात होय छै, तें सरस्वती के कृपाहै केना होतियै । पढ़लों-लिखलों कुलों में जनमतियै, तहियो कुछ नै तें कुछ विद्या हासिल करिये लेतियै, मतर एकरों किस्मत में बजरलंठ बनना लिखलों छेलै, ठेठीभक्त बनना छेलै, से बनी गेलै ।''

भुवनेश्वर काका के स्वर में क्रोध आरो दुख दोनो समैलों होलों छेलै ।

''है सब की बोलै छों, लाल काका, विद्या कुल-खानदान देखी कें थोड़े आबै छै । ऊ तें अभ्यास आरो मेहनत सें आवै छै । हों, ओकरों वास्तें कुछ-कुछ हेनों माहौल हुएँ, तें आरो बढ़िया । बमबम कें तें बाबूं कहलें छेलै, हमरों साथ शहर में रहै लें, मतर तैयारे कहाँ होलै ।''

''होतियै केना बेटा, ठेठी में ठिठियावै के जे आदत छै, अंग्रेजी जीहा पर चढ़तियै ?''

''काका, ई सब बात छोड़ों, बमबम छै कहाँ ?''

''खेतों पर भेजी देलें छियै, खेत पटैतें होतै ।''

''खेतों पर भेजी देलें छौ आरो वहू में इखनी, जे हमरा दोनो के मिलै-जुलै के समय होय छै ।'' ओकरा घोर अचरज होय रहलों छेलै।

''लाल का, तोहें तें जानवे करै छौ कि हम्में शहर सें मात्र एक-दू दिनों वास्तें गाँव आवै छियै, ओकरों में तोहें बमबम कें मिलै सें रोकी देलौ !''

''ई जरूरी छेलै; बेटा, तोरों समय बहुत कीमती छौं । एक्के-दू दिन वास्तें तें आवै छै, जों गाँव के विद्यार्थी कें तोरा सें बातचीत करी कें कुछ लाभ होय जाय छै, तें कत्तें सुंदर बात छै । बमबम पर तोरों ज्ञान के असर होयवाला नै छै ! से हम्मी ओकरा कही देलें छियै—तोरा सें नै मिलै लें, बहुत कुछ सोची-विचारी कें हेनों कहलें छियै । तोहें कटियो-टा एकरों वास्तें दुख नै मानियो, बेटा ! एकरा में तोरे नै, सौंसे गाँव के भलाय छै । ई बात तोहें आय नै, आवैवाला समय में बुझवौ।

ई ठेठी के ठोठों में अंग्रेजी आवें पारतियै, तें तोरे साथे नै पढ़तियै लिखतियै !''

००

बलेश्वर ढेर समय वास्तें कुछ नै बोललों छेलै । वैं जानै छेलै कि हुनी जे कही देलकै, ऊ ब्रह्मा के वचन आरो होन्हौं कें वैं हुनका की समझैतियै, ओकरा से तीन गुना बेसी उमरी के छेलै, हुनी । चुपचाप मुड़ी झुकैनें ऐंगनों सें बाहर होय गेलै ।

बलेश्वर गाँव सें शहर जाय रहलों छेलै । हर दाफी तें बमबम जरूरे उपस्थित रहें, ओकरा गाड़ी पर चढ़ाय ले मतर अबकी ऊ वहाँ उपस्थित नै छेलै । हों, गाँव भरी के कुछ जोंर-जनानी दुखहरण बाबू के कनियैनी साथे जरूरे ऐलों छेलै, आरो कुछ नवतुरियो सब, जे बलेश्वर के ज्ञान सें मुग्ध छेलै ।

ऊ गाँव सें शहर गेलै, तें दू दिन गाँव में एकरे चर्चा रहलै कि एतन्है-टा उमरी में कत्तें ज्ञान राखे छै । की बड़का-बड़का पंडित ओकरों सामना टिकें पारें । देखियौ, एक दिन एस.डी.ओ. कलक्टर जरूर बनतै आरो वही तैयारी लें बड़का शहर जाय रहलों छै ।

की-की नै चर्चा होय रहलौ छेलै, मतर एकरों चर्चा कांही नै होलै कि बलेश्वर के साथे बमबम नै देखैलै, हेनों तें कभियो नै होलों छेलै आरो नै काकाहौं एकरों कोय चर्चो उठैलकै। कोय पूछै के जरूरते नै बुझलकै कि ऐतें-जैतें भुवनेश्वरे काका सें पूछी लै कि कै दिनों सें बमबम कें आयकल गाँव-बस्ती में नै देखें छियौं ।

आखिर मय्यो-बाबू के चेहरा पर कोय परेशानी दिखें, तें कोय पुछवो करै, वहू नै छेलै । फेनु परेशानी दिखवे करतियै केना ? घोंर-बस्ती छोड़े के बात बमबम नें कनेली चाचा के माध्यम सें माय-बाबू तांय पहुँचवाय देलें छेलै, कि ऊ कोय नौकरी-चाकरी के तलाश में शहर जाय रहलों छै, ओकरों लें कटियो-टा चिंता करै के जरूरत नै । इखनी कोय कारखाना में काम जैथैं मिली जैतै, बढ़िया नौकरी मिलत्हैं ऊ घोंर ऐतै ।

बमबम कें मालूम छेलै कि कनेली चाचा के बातों पर कोय्यो अविश्वास करै नै पारें, तें बाबुए-मांय केना करतै । हिनी जिनगी में झूठ-बोलवे नै करलों छै । सें कनेली बातों पर विश्वास करी भुवनेश्वर काका मौन होय गेलों छेलै—कुछ यहू सोची कें कि नौकरी-चाकरी पर गेलों बेटा लें चिंते की ? चिंता तें तबें, जबें पूत परदेश नै जाय, घरे बैठी खाय।''

पाँच साल के बाद गाँव के लोगें जानलकै कि बलेसर बड़का ऑफिसर बनी गेलों छै—एक जिला के मालिक । जिला में ओकरों इच्छा के विरुद्ध एक पत्ता नै डोलें पारें । गाँव के लोग जेकरै सें ई बात सुनै, वही ओकरा आँख फाड़ी कें देखें लागें, ''बाप रे, बाप । हेनों ! आबें तें ई गाँवों के नाम इलाका भरी में बीस बाँस ऊँच्चों बुझों । आरो नै तें की।''

आरो तखनी तें सौंसे गाँव उपटी पड़लै, जखनी बलेश्वर पहिलो दाफी जिला के मालिक रूपों में गाँव ऐलै । की ताम-झाम छेलै, आगू-पीछू पुलिस के गाड़ी; बाप रे, बाप! मतर भुवनेश्वर काका कें ई समझै में नै आवी रहलों छेलै, कि बिना कोय खबर देलें बलेसर गाँव कैन्हें आवी गेलों छै । हेनों तें कभियो नै होलै । मतर हुनी बोललै कुछ नै ।

आबें लोगों कें समझै में आवी रहलों छेलै कि इनारावाला बगीचा में दू दिन पहिले सें कैन्हें ओत्तें बड़ों मंच बनैलों जाय रहलों छै । सब तें यहा बूझै छेलै कि इलाका में कोय नेता-वेता आवैवाला छै, यही ले एत्तें ताम-झाम सें मंच सजैलों जाय रहलों छै । नै तें ई गामों में खाली बीहे-शादी में जोर सें आवाज करैवाला कुंडाल लगै छै ।

बलेश्वर कें ओकरों घोंर पहुँचाय कें पुलिस सिनी वापिस लौटी गेलों छेलै आरो आबें ऊ असकल्ले गाँव के एकेक घोंर जाय रहलों छै। सबसें मिलै-जुलै छै । गाँव भर के माँगलों-चाँगलों दादा-दादी, नानी-नाना, मौसी-मौसा, गुलाब दा, कमल काका, संझा दीदी—है कहों केकरा सें नै! देर-देर तांय सुख-दुख के बात । कोय बोलवो करै—जा बेटा, बड़ी देर

भै गेलौं । ऐत्तें महीना के बाद ऐलों छों; घरों में माय-बाबू तोरों लौटै के आस देखतें होथौं, तें ऊ बोलै, "लौटवै नी, सरकारें हमरा जे पैसा दै छै, कथी लें, तोरे सिनी के सुख-दुख जानै लेली नी, खाली जान्है भर लें नै, दुख केना दूर होतै, एकरो उपाय करै लेली ।"

बालेश्वर के बात सुनी कें गाँव भरी के लोग कत्तें खुश छै, ई कहनै मुश्किल । सबकें यही लगै—जेना बालेश्वर ओकरे घरों के रहै ।

आरो एक दिन जबें यही बात कें लैकें बमबम-माय भुनेश्वर बाबू सें ई कहलकै "तोरा होना कें ऊ दिन बमबम कें नै बोलना चाही कि हम्मी बमबम कें तोरों लुग जाय लें मना करलें छियै, यही लेली, ऊ हमरों घोंर नै ऐलों छै; आय दू दिन पूरी जैतै, ओकरों गाँव उतरलों ।"

"तहूँ केन्हों-केन्हों बात सोचै छों । अरे, ई जहिया सें गाँव उतरलों छै, तहिये सें गाँव भरी कें लोगों से मिलिये तें रहलों छै । फुर्सत मिलतै, तें यहू घर ऐतै । तुरत्तें केकरो बारे में कुछ सोची लेना, ठीक नै । मतर हमरा ई समझै में नै आवै छै कि जों बलेसरें आवै के खबर बाबू कें देलें छेलै, तें 'दुखहरण दा' हमरा कैन्हें नी बतैलकै । नै, हेनों नै हुऍ पारें । फेनु बलेसर के हठासिये आवै के मतलब ।" काकां घरों सें निकलतें-निकलतें कहलें छेलै ।

आय पाँचमों रोज बीती रहलों छेलै । मंच के एकदम ऊपर कंडाल लगी गेलों छै, नीचे माइक-बैटरी, सब फिट । मतर बलेश्वर के जोड़ी-पाड़ी के आरो-आरो साथी सार्थें टुनटुनो कें है बातों कें लैकें हैरत होय रहलों छै कि जों बड़का नौकरी मिलै के उपलक्ष में बलेसरे के सम्मान होना छै, तें ऊ रोजकेवाला धरानों में अइयो केना छै !

"यहू बात छै, टुनटुन कि जेकरों सम्मान छेकै, वही मंचो सजाय में मदद करें; हेनों होय छै की ? तबें बड़ों घरों के बड़ों बात ।" अमोलिया बोललै ।

"अरे सुन-सुन ! कुछ सुनाय पड़ी रहलों छौ ?" टुनटुन चौंकतें बोललै।

ओकरों बात सुनी कें अमोलियो दोनो हाथों सें दोनो कानों के

पाँख थोड़ों मोड़ी कें वहा दिस करी देलकै, जन्नें सें कुछ-कुछ शोर उठी रहलों छेलै, आरो बोललै, "अरे, ई तें कोय जुलूस के आवाज छेकै । आबें हिन्नें जुलूस कथी लें आबें लगलै ?"

"ई बलेसर यहाँ जब तांय रहतै, हेन्है कें जुलूस-मुलुस ऐतै-जैतै रहथै । चल मंचों पर हमरौ सिनी ओकरा कुछ मदद करी दियै, जों हमरों सिनी के जरूरते पड़ी जाय ।"

"ठीक बोललैं ।" समर्थन में अमोलिया हाथ चमकैतें बोललै।

आरो मंच पर दोनो के पहुँचना छेलै कि बलेश्वर बोललै, "ठीक समय पर तोरा दोनो आवी गेलों छैं; हमरों आवै तांय यहैं रुकियै ! रुकवै नी ?"

"की बोली रहलों छैं, बलेसर। एक तें भोर सें खट्टी रहलों छैं, हमरो सिनी सें मददो मुँह खोली कें नै मांगलैं । की हमरा सिनी खाड़ो नै रहें पारवै ?" अमोलिया कहलें छेलै ।

"ठीक छै, ठीक छै। तें, हम्में घंटा-आध घंटा में लौटै छियौ ।" आरो ई कही कें ऊ घोंर दिस लपकलों छेलै ।

"टुनटुन, लगै छै, ई जुलूस भी बलेसर के स्वागते वास्तें गुलाब काकां बुलवैलें छै ।"

"हुएँ पारें । हुनकों वास्तें जुलूस-उलूस मंगवैवों कोंन बड़ों बात! आरो जों जुलूस कें यहीं आना छै, तें चुपचाप मंचों पर बैठ ! कन्हौं जाना छै, कथी लें ! दौड़ै लें दैं, गाँव के छौड़ा सिनी कें; देखैं नी, की रं झुंड बान्ही हुन्नें उड़लों जाय रहलों छै; जेना शिव जी के बराती ऐतें रहें ।" ई कहतें-कहतें अमोलिया मंचे पर पटाय गेलों छेलै । मतर टुनटुन बैठले रहलै । ऊ जुलूस ठियां गेलों भले नै छेलै, मतर नजर वहा दिस छेलै । जुलूस लपटोनिया पार करी गाँव के उचकवावाला परपट पर आवी गेलों छेलै । वैं निरयासी कें देखलकै—जुलूस में गाँव के एक्को आदमी शामिल नै छेलै, खाली बाहरी लोग । तें के लोग छेकै, ई सिनी?—वैं मनेमन सोचलकै, आरो निचिन्त लेटलों अमोलियां सें कहलकै, "देखैं तें एक्को लोग पहचानै में आवै छौ !"

''धूरो, तोरा हमरों लेटवों फुटलों आँखी नै सुहावै छै'' आरो ई कहतें ऊ उठी कें वहा दिस देखें लगलै ।

''अरे, मामला कुछ आरो बुझावै छै । एकठो जीप पर कोय पहलमान नाँखी आदमी हाथ जोड़लें खाड़ों छै आरो पाँचो सौ आदमी जीप के आगू-पीछू नारा लगैलें आवी रहलों छै; अरे, खुल्ला जीपो पर जे हाथ जोड़लों मरद छै, ऊ तें बमबमे हेनों बुझावैं छौ ।''

''पगलैलों छैं की ? बमबम आरो जुलूस ।'' टुनटुन ई कहीं ठिठयैलों छेलै, फेनु हठासिये हँसी रोकी कें कहलकै, ''ठीक सें देखैं, कहीं वही तें नै छेकै । कहीं हौ दिन कों बदला लेलें तें नै आवी रहलों छै, शहरों सें लठैत जुटाय कें आनलें रहें। याद छौ नी—रामनौमी के दिन की रं कुश्ती में रग्घू भइया सें दस पटकनियां खैलै छेलै । कहीं एत्तें सालों के बाद गुर्री निकालै लें तें नै आवी रहलों छै ।'' आबें वहूं अपनों दोनों हाथों कें दूरबीन बनैतें एक दाफी देखलें छेलै ।

''अच्छा बात सोचें पारलें छैं कभियो । पहिलें यहू तें जानैं कि बमबम छेकै की नै ? सूरत तें केकरो केकराहौ सें मिलें पारें ।''

''से तें छै।'' टुनटुन निश्चिंत हेनों लगलै ।

''अरे, ओकरों जीप तें जुलूस साथें यहा दिस आवी चल्लों छै, आरो देखैं, जुलूस साथे चार-पाँच ठो पुलिसो छै । तें, की बलेसरे हेनों बमबमो कें कोय बड़का सरकारी नौकरी हाथ लागी गेलों छै ।''

''बलेसरो सें बड़का नौकरी बोलें । हौ देखे, बलेसरो वहा जीपों पर चढ़लों आवी रहलों छै !''

''पता नै, की होयवाला छै !''

''अरे, कुछ नै होयवाला छै । हौ देखें, ऊ आदमी जीप सें नीचें उतरी कें लाल काका के गोड़ छुवी रहलों छै आरो की रं काकां ओकरा गल्लों सें लगाय लेलें छै । अरे, ई तें बमबमे छेकै । पहिलका सें आरो कत्तें सुंदर लागें लागलों छै । झोटों बढ़ाय लेलें छै, तें पहचानै में नै ऐलै । आबें तें ई साफ होय गेलै, कि ई मंच नेता-वेता वास्तें नै बनलों छै, नै बलेसर के स्वागत होयवाला छै, तबें ई तें बमबम वास्तें बुझावै

छै तबें ऊ बमबमे छेकै।'' टुनटुन नें कहलें छेलै ।

''मतर, ई बजरलंठ बमबम हेनों की करी बैठलकै, जे है जुलूस ओकरों पीछू लगलों छै !'' अमोलिया मुँह बिचकैते आरो हाथ चमकैतें कहलें छेलै ।

''अरे, नै बुझै छैं, पाँच साल के बाद काका के मनैला-ऊनैला पर लौटी रहलों छै आरो ई बलेसर ओकरों पकिया दोस्त, तें है ताम-झाम करवैलें छै । आखिर बलेसर कें अपनों पैसा, नौकरी, दोस्ती के तें धौंस जमानै छै । हमरा तें लगै छै, यहीं बमबम कें खोजबैलें होतै, बड़का अफिसर होला के कारण, पहुँच तें होय्ये गेलों छै ।''

टुनटुन के बातों पर नै तें अमोलिये कुछ बोललों छेलै, नै टुनटुने आगू कुछ ।

००

आबें बेरा झुकै-झुकै पर छेलै ।

मंच बहुत बड़ों नै छेलै, जानिये-बूझी कें नै बनैलों गेलों छेलै। बेसी-सें-बेसी चार आदमी फैलारों सें खड़ा हुएँ पारें । मंचो हेने छेलै; जेना, गाँव में भर्तुहरि खेला के मंच होय छै । चारो दिस सें एकदम उदामों आरो चारो दिस दर्शक-सुनवैय्या ठसमठस जमलों ।

मंच के नीचें एक दिस बीस कुर्सी लगैलों गेलों छेलै, जैपर भुवनेश्वर काका आरो दुखहरण बाबू आवी कें पहिले सें बैठलों छेलै । जखनी मंचों पर बलेश्वर ऐलों छेलै, चारो दिस एकदम चुप्पी फैली गेलै, ई देखै लें—आखिर आबें की होतै ।

बलेसर एक दाफी आपनों बायां दिस ठाढ़ों बमबम के दायां हाथ अपनों बायां सें उठैने मंचों पर एकदम धीरें-धीरें घूमी गेलों छेलै, फेनु माइक के नगीच आवी कें माइक कें दोनो हाथ सें संभालतें कहना शुरू करलकै, ''आय हम्में अपनों दोस्त के ई गाँव में स्वागत करी रहलों छियै, तें की बतैय्यौ, कत्तें गौरव सें भरी गेलों छियै । है नै कि बमबम के है पहिले सम्मान छेकै, पहिले तें राज्ये सरकार सम्मानित-पुरष्कृत करी चुकलों छै; अपनों गाँव में है दोसरों सम्मान छेकै—छेकै नी गौरव के

बात ? भला पाँच देशों के बीच के प्रतियोगिता में अपनों देश कें जीत दिलाय देवों, वहू भाषण-प्रतियोगिता में; कोय साधारण बात छेकै की? कुछ राज्य सरकार बमबम कें लाखो टाका दै कें घोषणा करी चुकलों छै, देश के सरकार अलग सें पुरस्कार दै के घोषणा करलें छै, मतर है सब होलै केना कें, है सब भी जानना जरूरी छै ।''

ई कही कें बलेश्वर क्षण भरी लें चुप रहलों छेलै । आरो लोग तें आरो चुप । तें, ऊ आगू बोलना शुरू करलकै, ''पाँच साल सें ऊपरे के बात छेकै, लाल काकां बमबम कें हमरा से मिलै लें मना करी देलें छेलै, जानै छौ कैन्हें ? कैन्हें कि एकरों मिलला सें हमरों पढ़ाय में बाध ाा होतियै । आबें सोचें पारों, ई बातों के असर केन्हों हमरों लंगोटिया दोस्तों के मनों पर पड़लों होतै । बात यही तक होतियै, तें कोय बात नै, चूँकि पढ़े के बेसी, हमरो साथी के मोंन खेल-कूद में लगै, तें यहीलें काका एकरा बजरलंठ, अकसलेल्हों, गोबरगनेश, आरो नै जानौ की-की कही कें पुकारै ! काका लुग एकरों एक नाम 'ठेठिया' छेलै, कैन्हें कि बमबम ठेठी छोड़ी कें हिन्दियो में नै बोलै । नतीजा ई होलै कि एकरों यही नाम हमरों साथी सिनी में प्रचलित होय गेलै । यहाँ पर गाँव के जत्तें लोग उपस्थित छों, कोय बतावों पारों कि हमरों ई दोस्त के असली नाम की छेकै ? शायत दू-चार छोड़ी कें कोय्यो नै ।''

मिनिट भरी वास्ते सभा में चुप्पीये-चुप्पी। जे जानवो करै छेलै, वहू चुप छेलै कि हेनों नाम बोलै में ओकरों जी लटपटाय नै जाय । ई देखी बलेश्वर बोललै, ''तें जानी ला, हमरों मित्र के असली नाम बमबम नै; नाम छेकै—त्रियंबक। हेनों सुंदर नाम के जग्घा पर जबें काकाहैं उलूल-जुलूल नाम लैकें बुलैतै, तें आन लोगों कें की पड़लों छै कि ऊ सब त्रियंबक बोलें ।''

बलेसर एक क्षण लेली कहतें-कहतें चुप होय गेलों छेलै आरो फेनु बमबम के दायां कंधा थपथपैतें कहना शुरू करलकै, ''बमबम आवी कें हमरा बोलै—बाबू जबें है सब नाम लैकें हमरा बोलावै छै, तें हमरों जी कत्तें छोटों होय जाय छै—मतर काका कें की लेना-देना छेलै, कि

एकरों जी छोटों होय रहलों छै आकि लम्बा । हुनकों तें एक्के इच्छा छेलै कि हमरों बेटा, हमरे नाँखी अंग्रेजी जानें । हम्में कहै छियौं, एक हिन्दुस्तानी कत्तो अंग्रेजी जानी लौ, अंगरेज तें नहिये नी बनी जैतै । अपनों भाषा कें कमजोर बुझवों सबसें बड़ें कमजोरी छेकै । हम्में अपनों ज्ञान कें सुंदर-सें-सुंदर ढंगों सें खाली अपने भाषा में उतारें सकै छी । अपने भाषा सबसें जुड़ाव बनैलें राखै छै । आय हम्में ठेठी में बोली रहलों छियै, तें तोरा सिनी तें बुझिये रहलों छौ, बच्चा-बुतरुओ बूझी रहलों छै । अपनों भाषा सें बेसी अंग्रेजी कें महान समझवो हमरों गलती छेकै आरो त्रियंबक कें अंग्रेजी सिखाय पर लाल काकां जे जोर देतें रहलै, है हुनकों जिनगी के भारी भूल छेलै । जों हुनी हमरों दोस्त कें ठेठी बोलै पर गर्व करतियै, तें आय ई इलाका भरी के नाम रौशन करतियै। कभी देखलें छौ कि हमरों ई मित्र ठेठी में केन्हों धुँआँधार बोलै छै—सुनवौ, तें बगोछों लगी जैथौं । काकां कभियो एकरों मनों के इच्छा जानाहै के कोशिशे नै करलकै—कि त्रियंबक आखिर बनै लें की चाहै छै, अपने इच्छा लादे पर औला-बौला रहलै । त्रियंबक यानी ई गाँव लें बमबम, आवी कें हमरा सब बात बतावै छेलै—ई बात हम्में कही चुकलों छियौं । की काकां कभियो ई जानै के कोशिशो करलकै—यैं कत्तें अच्छा वंशी बजाय छै, कि हवौ वैठां आवी कें रुकी जाय ! काका कें ई लैकें एत्तें गुस्सा रहै कि काकी कें कहै—तोरों बेटा गवैया-बजवैया बनथौ; दुआरी-दुआरी पर सरंगा बाबा नाँखी कपड़ा उगैहथौं।''

कहतें कहतें एक क्षण बलेसर रुकलों छेलै, अपनों दोनो ठोर कें कस्सी कें दबैतै हुएँ । फेनु एक जोर सें साँस लेतें कहना शुरू करलकै, ''ई की कम छै कि हमरों मीत एत्तें हारला के बादो एकदम सें नै हारलै, आरो नै हारलै, तें एकरों अपनों मनोबल कहों । वरना की छोड़लै छेलै, काकां! हमरे लुग एकरों शिकायत नै करै, सबके लुग एकरों बेढंग होय के बात करै—है नै जानै छै, हो नै जानै छै, जिनगी में की करें पारतै; ठेठी छोड़ी कें एक पंक्ति अंग्रेजी के बोलें पारै छै की! ठेठीये में बोलतै, ठेठीये में ठिठयैतै, तें ठेठीये सें ठेंसी कें जिनगीयो गवैंतै—आरो

जों एकरौ सें मोंन नै भरै, तें इस्कूली में जाय कें गुरु जी से यहें सब बोलै। नतीजा में गुरु जी सें जे मार त्रियंबक खाय, ओकरों तें वर्णन नै । है नै कि काका कें है बात मालूम नै हुऐ, मतर हुनी तें यहा बुझै कि एकरहै सें ई सुधरें पारें । आबें तोरूहे सिनी सोचौ—आठ-दस साल के एक बच्चा जबें इस्कूली में अपनों साथी सिनी के बीच गुरुजी से पिटैतें होतै, तें केन्हों लगतें होतै । यहा बात लैकें साथियो चिढ़ावै ।''

बलेश्वर एक क्षण वास्तें फेनु रुकलों छेलै; आरो जेबी सें रुमाल निकाली, मुँह पोछतें कहना शुरू करलें छेलै, ''है की कम बड़ों बात छै कि गाँव में एत्तें अपमानित होला के बादो ऊ कभियो केकरौ ऊरेफ नै बोललै । यही तें हमरा सिनी ई गाँव के मिट्टी सें सिखलें छियै। हों, जबें त्रियंबक कें लगलै कि पानी माथों सें ऊपर बही रहलों छै, तें गाँव छोड़ी देलकै; शहरों में एकटा छोटों-मोटों नौकरी पकड़ी लेलकै, मतर वंशी बजावै के लगाव नै छोड़लकै, नै अपनों गाँव के बोली कें; ठाठ सें वहौं ठेठी बोलतें रहलै, शहरों में । एक दिन वही लगन एकरा नामी वक्ता बनाय देलकै, एत्तें नामी कि पाँच राज्य के भाषण-प्रतियोगिता में सबसे ऊपर रहलै । काका के बजरलंठ बेटा देश के नामी वक्ता बनी गेलों छै, वहू की, अपनों ठेठी भाषा के । राज्य-राज्य सें पुरस्कार एकरों नाम आवी रहलों छै । ओत्तें टाका, कि हम्में पाँच जनमों तक एस.डी.ओ. रहियो कें नै कमावै पारवै । आय अपनों गाँव में अपनों दोस्त के सम्मान वही लें छै ।''

ई कही कें एक दाफी बलेश्वरें बमबम कें गल्ला सें लगाय लेलें छेलै आरो फेनु माइक के नगीच आवी कें कहलें छेलै, ''अपनों ठेठी, जेकरा आबें लोगें अंगिका बोलै छै, ऊ अंग्रेजी सें लाख गुना बेसी ताकतवर छै । सोचौ, बीहा-शादी में कोय की अंग्रेजी में सोहर, समदौन गावै छै । गावै छै, तें ठेठिये में नी । जों अंग्रेजी एत्है महान भाषा छै तें गाँव के पुरहैत आरो भगत अंग्रेजीये में कैन्हें नी मनौन, उदासी, प्रभाती गावै छै । यही गाँव के नवटोलियो के केन्ही छेलै; तिनकौड़ी; की रं देश में नाम कमाय रहलों छै, ठेठिये बोली कें नी । हम्में निवेदन करै

छियौं कि कोय ठेठ अंगिका में बोलै, तें कम नै बुझियौ; बजरलंठ नै कहियौ, लाल काका तोरा सिनी कें नै मालूम कि आय दुनियां में वहू भाषा कें बचाय के कोशिश होय रहलों छै, जेकरा पाँच आदमी बोलै छै अपनों ठेठी अंगिका तें पाँच करोड़ लोगों के भाषा छेकै । तोरा सिनी नै जानै छौ, आय यही अपनों ठेठी कें बचाय लें हजार सें बेसी कवि-लेखकें अपनों जिनगी झोंकी देलें छै । हमरा कुछुवो नै कहना छै! बस आबें हम्में एतन्है चाहवै कि हमरों बाबू आरो लाल काका एक्के साथ हमरों मित्र के गल्ला में ई माला पिन्हाय कें बमबम कें त्रियंबक होय कें गौरव दौ ।''

आरो जखनी भुवनेश्वर काका साथें दुखहरण बाबू मंचों पर ऐलै, तखनी दोनो के आँख छलछलाय रहलों छेलै । बमबम नें दोनों ठो गोड़ छूलें छेलै आरो एतन्है कहलकै, ''जिनगी के सब दुख धुली गेलै ।''

तखनी सभा में ऐलों कोन बूढ़ों-बुजुर्ग के आँख लोराय नै गेलों होतै ।

■

तिनकौड़िया

''बाबू, हम्में इस्कूल नै जैभौं, सब हमरों नामे पर हाँसें लागै छै, जबें गुरुजी हमरा हमरों नाम लैकें बुलावै छै । फेनु गुरु जी ओकरा सिनी कें डाँटतै तें की, उल्टे अपनो मुस्कें लागै छै । बाबू, की तिनकौड़ी एत्है खराब नाम छेकै, जों खराब नाम छेकै, तें तोहें हमरों हेनों नाम कैन्हें रखलौ ? आखिर तिनकौड़ी के मतलब की होय छै ?''

जखनी ई बात तिनकौड़ी अपनों बाबू पैरू सें कहलकै, तखनी पैरू ऐंगना के बीचे-बीच बँसखटिया पर लेटलों होलों छेलै । तीन रोजों तांय ऊ बोखारे सें जकड़लों रहलै, आबें ऊ खाली उठवे-बैठवे नै करै छै, कुछ-कुछ चलो-बुलो पारै छै । हकीम साब अपने सें नबज देखी जाय छै, कुछ दबाय दारुओ जैतें-जैतें रखी जाय छै । है हकीमे साहब के देखरेख के चमत्कार छेलै कि पैरू चारे रोजों में चलै-बुलै लायक होय गेलों छै । हकीम साहब जैतें-जैतें तिनकौड़ी कें पाचक के दू-तीन गुल्ली थमाय लें केन्हों कें नै भूलै, यै लेली हुनकों यहाँ एकरों आना-जाना लगले रहै छै । पैरू नहियो कहै छै, तभियो ।

होना कें बुढ़ापा रों शरीर, आरो जाड़ा-बरसातियो में मजूरी करै के सिवा कमावै के कोय साधनो तें नै छेलै, से बीमारी तें ओकरा घेरते रहै आरो तिनकौड़ी कें हकीम साहब के यहाँ जान्है-आना छेलै, जे ओकरा अच्छो लगै । एक हकीमे साहब कन तें ऊ मनों सें जाय छेलै। पाचक के गुल्ली तें मिलवे करै, हकीम साहब के छोटका बेटा सुलेमान ओकरों पकिया दोस्त बनी गेलों छेलै । सुलेमान के किताब उर्दू में होय छेलै, मतर जखनी ऊ मुड़ी हिलाय-हिलाय कें कविता पढ़ै, तें ऊ वैं जरूरे समझै । ऊ हिसाबों में बड़ी तेज छेलै आरो जबें तिनकौड़ी रोजे-रोज

ओकरा कन आबें लगलै, तें हकीम साहब के कहला पर सुलेमानें ओकरा जोड़-घटाव, गुणा, भाग, लघुत्तम, महत्तम, सब सिखाना शुरू करी देलें छेलै ।

"की हकीमो चाचा, तोरों नामों पर हँसै छौं आकि सुलेमान ही?" पैरू नें लेटले-लेटले ओकरों माथों पर हाथ फेरतें पुछलकै ।

"नै, हकीम काका तें हमरा खूब मानै छै, कभी-कभी तें हुनी हमरा चौवन्नी तक दै छै, कहै छै—जा, लेमनचुस कीनी कें खाय लियों। बाबू, हुनी हमरा पैसा कैन्हें दै छै, हम्में हुनकों वास्ते कोय काम तें नै करै छियै !"

"बेटा, ई समाज हेन्है कें नी चलै छै । हम्मू हुनकों घरों के छौनी-दौनी करै छियै, तें देल्हौ पर मजूरी नै लै छियै । मजूरी सें बेसी हुनी हमरों-तोरों, तोरो माय के दवाय-दारू दै में ही खरच करी दै छै ।"

"आरो बाबू, हकीम काका कत्तें दुलार सें हमरों नाम बोलै छै—तिनकौड़ी बाबू । तखनी हमरा ई नाम खराब नै लागै छै ।"

"बेटा, ओन्हौ कें ई नाम खराब थोड़े छै । आबें, पुछलें छों, तें जानी लें । बच्चा में तोरों तबीअत बड्डी खराब होय गेलौं; हकीमो काका परेशान होय गेलौं । तबें तोरों माय गाँव के एक दादी कें तीन कौड़ी के दामों पर तोरा दै देलकौं आरो तोहें तीने दिन में ठीक होय कें घोंर आवी गेलौ ।"

"आरो हमरों नाम तिनकौड़ी होय गेलै ।"

"हों, यहा नाम तहिये सें गाँव में प्रचलित छै, तें घरो में सब बोलै छौं । ओना कें तोरों नाम हकीम काका की रखलों छौं, जानै छौ?"

"की ?"

"श्रवण कुमार ।"

"तें, यही नाम सें हमरा कैन्हें की पुकारै छौ !"

"तें, आय सें हम्में तोरा यहा नामों सें पुकारवौं, ठीक छै ।"

"तें, की इस्कूलियो में सब हमरा यही नामों सें पुकारतै ?"

पैरू तिनकौड़ी के ई सवालों पर एकदम चुप होय गेलै । तबें

वैं फेनु सें पुछलकै, ''बोलै छौ कैन्हें नी, बाबू जी, इस्कूली में कल सें हमरा कोय तिनकौड़ी कही कें नै नी चिढ़ैतै ?''

''अभी की कहियौं, बेटा ।''

''तें, कल सें हम्में इस्कूलो नै जैभौं । तोहें मारवो करवौ, तहियो नै जैभौं, आरो जैवे करवै कथी लें, जबें सुलेमान भाय हमरा सब मनों सें बतैये रहलों छै—जोड़, घटाव, गुणा, भाग ।''

''नै बेटा, हेनों नै बोलियौ, गुरु जी आकि दोस्त के कोय बातों कें लैकें कोय इस्कूलो छोड़ै छै की ? हमराहै देखों, हमरों नाम की छेकै? हमरों नाम छेकै—पैरू । माय बोलै छेलै कि हमरों जनम पैर दैकें होलों छेलै, तें हमरों नाम पड़ी गेलै—पैरू । गाँव भरी हमरा पैरुवे बोलै छै, तें गाँव छोड़ी कें हम्में कहाँ भागी गेलियै । गाँवे में छियै आरो नामो कहाँ बदललै, पैरू के पैरू—अभियो वही नाम । बेटा; गाँमों में तें हेने सब नाम होवे करै छै—अठनियां, बेरासी, तेरासी, मंगलियाँ, केकरा पर के हँसै छै । आबें नाम सें की होय छै, बेटा, काम सें नाम होय छै । हेना कें तोहें अभी इस्कूल नै जाय लें चाहै छों, तें कोय बात नै । इखनी तोहें हमरे साथ रहों, हमरों काम में मदद करियो आरो फेनु सुलेमान तें बहुत कुछ बतैये रहलों छौं ।''

पैरू के बात सुनी कें तिनकौड़ी एकदम सें खिली गेलै । हेनों बात नै छेलै कि ऊ माय-बाबू के हालत एकदम सें नै समझी रहलों छेलै। नों-दस साल के छेवो तें करलै, तें ओकरा ई समझै में आविये रहलों छेलै कि बाबू कॉपी-किताब तें ढेर, इस्कूली के फीसो ठीक सें नै दिएँ पारै छै । से बाबू के बात सुनत्हैं वैं कहलकै, ''बाबू, आबें इस्कूल खाली परीक्छे वक्ती गेलों करवै । नाम तें नहिये नी काटतै, हकीम चाचा के मान के नै राखै छै ! एक दाफी इस्कूली में बोली देतै, तें यहा काफी ।''

''से तें छै।'' पैरू नें अपनों मुँह सरंगों दिस करतें कहलें छेलै आरो इस्कूल जाय वास्तें ओकरा दोबारा नै कहलें छेलै, ई सोची कें कि इखनी ओकरों आर्थिक हाल होन्हौ कें बड्डी खराब होय चुकलों छै ।

पैंचों-उधार पर समय कटी रहलों छै । से तिनकौड़ी के बात वैं मन मसोसी कें मानी लेलकै।

चार-पाँच रोज आरो बितलै, तें पैरू बारी-तरकारी के काम करें लगलै । ओकरा सहायता करै में तिनकौड़ी दू डेग आगुवे रहै । होना कें ऊ कुँइया-इनारा पर तें नै जाय, कैन्हें कि कुँइया-इनारा सें ओकरा बड्डी डोंर लगै । वैं माय-बाबू सें सुनलें छै कि कुइयाँ एक ताड़ गड्ढा होय छै, पानी भले कत्तो ऊपर रहै । यही सें वैं खाली एतन्है बाबू सें जानी लेलें छै कि कुइयाँ में पानी केना आवै छै ? की नद्दी सें आवै छै आरो आवै छै, तें की भीतरे-भीतरे नहर खोदलों जाय छै आकि नै?

पैरू ओकरों सब सवालों के जवाब दै छै, जहाँ तक ऊ जानै छै, जे सवालों के जवाब नै जानै छै, ऊ गाँव में ओकरा सें बेसी पढ़लों-लिखलों लोगों लुग लै जाय छै कि हौ बात जानी लें । हेना कें तिनकौड़ी सौंसे गाँव के लोगों सें परिचित हुएँ लगलों छै । कुम्हार टोलो, बढ़ई टोली, गुवर टोली, कैथ टोली, बभन टोलों—सब टोलों के लोग ओकरा जानें-पहचानें लगलों छै । जोगीरा यादव के यहाँ दिनों में दू दाफी बिना गेलों ओकरों चैन नै मिलै । सानी-पानी सें लै कें दूध के छर-छर दुहैवों ओकरा बड्डी अच्छा लगै छै । आबें वैं खूब जानें लगलों छै कि कोन गाय के दूध पिठाली रं होय छै, कोन गाय के पनछेछरों; आखिर कैन्हें नी जानतै, आबें ओकरों उमिरो तें बढ़ी कें बारह साल के होय रहलों छै ।

पैरू खेत-पतार नहियो गेलों, तें वही जाय के खेत-बारी देखी आवै छै । कोनी लत्ती में जीरी आवै के कोन समय छेकै, कबें फोंर आवै छै, कबें कोंन फोंर पकें लगै छै, पैरू ओकरा सब कुछ बताय देलें छै। आरो सब बात जानै वास्तें तें हकीम चाचा छेवे करलै । सुलेमान तें आबें ओकरों दोस्ते बनी गेलों छेलै । बस साले भर के तें दोनो बड़ों-छोटों छेलै ।

आबें तें ढेरे रात तक ऊ हकीम चाचाहै के यहाँ रुकी जाय छै। जखनी हकीम जी सरंग दिखाय कें बतावै—हौ जे हुन्नें दिस सात गो

तारा देखै छौ, ऊ सतभैया तारा छेकै । सात भाय, एक-दू भाय नै, सात-सात ठो भाय, तहियो सब में कत्तें मेल । कोय्यो हिन्नें-हुन्नें नै होय छै । यही सें तें एत्तें-एत्तें तारा में ई सातो भाय कें दूरहे सें पहचानलों जावें पारें ।

तिनकौड़ी कें बड़ी अचरज लगै छै कि धरती जबें घूमै छै, तें हमरा सिनी कैन्हें नी घूमै छियै, तखनी हकीम चाचा ओकरा पृथ्वी के बारे में ढेर सिनी बात बतावै, नदी केना बनलै, पहाड़ केना बनलै, कोन जीव केन्हों होय छै, ऊ सब कहाँ-कहाँ रहै छै ।

ई सब बात ओकरा हेने विचित्र लगै कि नै पूछों । तखनी ऊ दौड़ी कें बभन टोली के भैरो मिसिर के यहाँ पहुँची जाय । एक हुनके घरों पर तें अखबार आवै छेलै । हुनकों बंगला पर एक टा अलमारियो छै, जैमें बच्चा-बूढ़ों लें सौ, दू सौ किताबो होतै । तिनकौड़ी वहीं पहुँची कें भैरो मिसिर सें जे कुछ पूछै, तें हुनी सब बतावै—पृथ्वी पर कोंन-कोंन धरम छै, कोंन-कोंन नामी देवता छै, हुनकों सवारी की-की छेकै ? आखिर मिसिर काका के पास यही लें तें दौड़ी-दौड़ी कें ऊ आवै भी छै, नै तें आरो बुतरु-बच्चा मिसिर जी सें दूरे भागलों रहें, कैन्हें कि बच्चा-बुतरू हुनकों लुग जब तांय रहै, ऊ सब दौड़ैतै रहें, कभियो ऐंगनों सें बाल्टी-लोटा लान, तें कभियो सुंघनी मांगी कें लान, कभियो पान के दुकान दौड़ावै, तें कभियो केकरो बोलाय लें कैथपट्टी, गुअरपट्टी तक बच्चा-बुतरु कें दौड़ैतें रहें, से गामों के बच्चा हुनकों लुग जाय के नामे सें हड़कै छेलै । मतर तिनकौड़ी है सब बातों सें कभियो नै घबड़ावै । भैरो मिसिर के सब काम करला के बादो जैतें-जैतें एक दाफी जरूरे पूछी लै, ''आरो कुछ, बाबा ? कुछ करना छै, तें बोलों ।''

भैरो मिसिर ओकरों यहा व्यवहार सें ओकरा बड्डी मानै छै । तिनकौड़ी जतना-टा पूछै छै, ओकरों उत्तर तें बतैवे करै, आरो-आरो बात बतैतें चलै छै, जे हुनका जरूरी लगै छै । यही सें तिनकौड़ी खाली गाँव के पंचे-सरपंच के बारे में नै जानें लगलों छै, महाराणा प्रताप, शिवाजी, महारानी लक्ष्मी बाई आरो महात्मा गांधीयो के बारे में भी खूब जानें

लगलों छै । आबें तें पैरूओ ओकरा सें देश-दुनियाँ के बारे में पूछें लगलों छै। वैं अंग्रेजी सेना कें तें आँखी से देखलें छेलै, मतर सुभाष बोस आरो महात्मा गांधी कें नै आरो जबें वैं अपनों बेटा के मुँहों सें ई सुनै कि हौ दिनों में हिनका दोनो भागलपुरो ऐलों छेलै, तें ऊ एकदम बच्चे नाँखी खुश होय जाय आरो तखनी तिनकौड़ी ढेर-ढेर बात आरो बाबू कें बतावै ।

पैरू कें तें जेना राजगद्दी मिली गेलों रहें ।

००

आय दस सालों के बाद शंभुनाथ गाँव ऐलों छै । मास्टरी करै लें पूर्णिया गेलै, तें वहाँकरे के होय कें रही गेलै । हेनों कोय दिन नै हुऐ कि पैरू अपनों बेटा लुग कोय-न-कोय बातों कें लैकें शंभुनाथ के चर्चा नै करी दै । आखिर छेलै तें दोनो पकिया दोस्त ।

शंभुनाथ के गाँव उतरना छेलै कि सीधे पैरू के दुआरिये पर ऐलै आरो दोपहर सें साँझ तांय पलनिये में बैठलों-बैठलों सौंसे गाँव के बातचीत होतें रहलै । ई बीचों में पैरू तिनकौड़ी कें एक्को दाफी चालों दै कें नै बुलैलकै; अपन्है सें जाय-जाय कें पानी-कलव्वो लानतें रहलै । होना कें तिनकौड़ी पलनिया के आगुए-पीछू करतें रहलै कि कखनी बाबू चालों दै दें । एक दाफी शंभुनाथ के ओकरा पर नजरो पड़लों छेलै, जबें दूसरों-तेसरों दाफी देखलकै, तें पुछलकै, ''है बच्चा के छेकै, तिनकौड़िये तें नै छेकै ?''

आरो जबें पैरू 'हों' कहलकै, तें शंभुनाथें झपटी कें ओकरा लै आनलकै, गोदी में बैठैलकै आरो पूछें लगलै, ''कोनी कलासों में पढ़ै छैं।''

हुनकों ई सवालों पर जबें तिनकौड़ी कुछ नै बोललै, तें पैरुवे बोललै, ''इस्कूली में नाम तें छै, मुदा इस्कूल नै जाय छै ।''

''कैन्हें ?'' शंभुनाथ कें घोर आचरज होलै, ''एत्तें बड़ों होय गेलै आरो इस्कूल नै भेजै छैं, से कैन्हें ?'' फेनु जल्दिये बातों कें समझतें बोललै, ''कोय बात नै, तोहें एकरा हमरों साथ लगाय दे, आबें एकरों

पढ़ाय-लिखाय के भार हमरहै पर ।''

मतर यै बातों पर पैरू कुछ नै बोलनै । जबें कुछ नै बोललै, तें शंभुओ नाथ नें दोबारा कुछ नै कहलकै, ई सोची कें कि एकलौता बेटा छेकै, आखिर यही तें पैरू कें घरों-बाहरो के काम में मदद करतें होतै।

तखनिये पलनिया पीछू सें चूड़ी खनकै के आवाज ऐलै, तें पैरू ई कहतें उठलै, ''चाय लैकें आवै छियौ ।'' आरो ऊ वहाँ सें उठी गेलै।

शंभुनाथ तिनकोड़ी सें ढेर-ढेर बात पुछतें रहतै—जब तांय पैरू लौटी नै ऐलै आरो जबें दोनों चाय पीयै पर होलै, तें चायवाला कुल्हड़ कें एक दिस रखतें शंभुनाथ बोललै, ''तिनकोड़ी कें कोय शहर के इस्कूली में पढ़ाय रहलों छैं की आरो हमरा सें छुपाय रहलों छैं ? खैर कोय बात नै । पढ़ाय रहलों छै, तें अच्छे बात छै । आबें गाँमों में पढ़ाय-लिखायवाला बाते कहाँ छै ! सब तें अपनों बच्चा कें दिल्ली-राजस्थाने भेजी रहलों छै, गाँव में बुतरु कें रखवो—पाठा कें बोतू बनैवों छेकै ।'' आरो हँसतें हुएँ चाय सुर-सुर करतें सुड़की गेलै।

००

आय पाँच सालों के बाद शंभुनाथ फेनु अपनों गाँव ऐलों छै आरो ऐलै, तें सबसें पहिले पैरुवे के यहाँ उतरलै । सोचलकै—घरों में छेवे करै के ? यहीं बिहानको बेरा गुजारलों जाय । दस बजे तांय ही तें ठहरना छै, फेनु तें इस्कूले पहुँचना जरूरी । है पहिले दाफी होतै कि शहर के एत्तें-एत्तें शिक्षक साथें शिक्षा पदाधिकारी तांय गाँव ऐतै । पहिले दाफी होतै कि अपनों हाथों सें गाँव के इस्कूली लड़का कें सम्मानितो करतै, पुरस्कृत करतै ।

दू दिन पहिले सें गाँव भरी में इस्कूलवाला बातों के कुकआरों मचलों होलों छेलै । तिनकौड़ी-बाबुओ के इच्छा होय रहलों छै—ऊ तिनकौड़ी कें लैकें इस्कूल पहुँचै । फेनु शंभुओ तें तिनकौड़ी लैकें आवै लें कही गेलों छै, नै कुछ बोलें पारतै, तें नै; जैतें तें कुछ सीखी कें जरूरे ऐतै । बहुत कुछ नै, तें एतना तें जरूरे कि बड़ों लोगों के नगीच केना ठाढ़ों होना चाही, केना बोलना चाही । मतर कुछ सोची कें पैरू

झिझकी जाय छै । ओकरा याद ऐलै—यही बात तिनकौड़ी-मैय्यों कहलें छै कि अपनो बेटाहौ कें लै जइयों। सुनै छियै, बड़का-बड़का साहबो आवी रहलों छै । "कही तें रहलों छै ठिक्के तिनकौड़ी-माय; हमरो यही इच्छा छै, मतर ऊ दिन तें सब सुंदर-संदर कपड़ा पिन्ही कें ऐतै आरो तिनकौड़ी के कपड़ा देखथैं छों; जों साबुन सें धोवो करवौ, तें चिंगटे दिखैतैं; हमरों तें कोय बात नै छै । इस्कूली के बाहरो ठाढ़ों होय जैभै, तहियो चलतै । कोय देखभौ करतै, तें की बोलतै—सब्भैं यही भेषों में तें देखतें ऐलों छै, मतर तिनकोड़ी के कपड़ा साथ-सूफ नै रहतै, तें कें नै बोलतै । तिनकैड़ीयो कें केन्हौ तें बुझैतै ! नै बुझैतै ?" हम्में टुटलों मनों सें कहलें छेलै ।

"की कहतै, कुछ नै कहतै आरो तिनकौड़ियों के मनों में कुछ नै होतै । हम्में तें गोबर उठावैवाली छेकियै, आरो गोबर के गुण हम्में जानै छियै, जहाँ गिरै छै नी, उठैला पर वहाँकरों चीज उठैले उठै छै । तिनकौड़ी जैतै, तें कुछ सिखिये कें ऐतै, गोबर के रूप-रंग नै, ओकरों गुण देखलों जाय छै । कुछ आरो-आरो बात नै सोची कें खाली ओकरा लै जाय के बात सोचों । फेनु के जानै छै कि ज्ञान के हेनों मेला ई गाँव में लगवे करतै । हम्में कल विहानिये ओकरों पैंट-कमीज नद्दी में थपकारी ऐलों छियै ।" तिनकौड़ी-माय के एक-एक शब्द याद ऐथौं, पैरू 'अच्छा' कहतें हुऍ अपनों काम निपटाय लें बाहर निकली गेलै ।

oo

इस्कूली में साहब आरनी तें बारह बजें ऐतियै, मतर बच्चा-बुतरु आरो बूढ़ों-बुजुर्ग के मेला इस्कूल खुलला के साथे लगना शुरू होय गेलों छेलै । बच्चा-बुतरु के गलगुदुर तें हिजलौ मेला कें मात दैवाला आरो तखनी तें तितिर-बितिर होलों सब बच्चा इस्कूली के अहाता दिस दौड़ी पड़लै, जखनी दू छोटों मोटर गाड़ी पों-पों करलें इस्कूली अहाता के बाहर खड़ा होलै ।

ठीक तखनिये शंभुनाथ पैरू के नगीच ऐलों छेलै आरो ई कहते कि तिनकौड़ी हमरे लुग रहतै, वैठां पहुँची गेलों छेलै, जहाँ मंचों के

सामनाहै में आठ नौ कुर्सी रखलों गेलों छेलै । सबसें आखिरी कुर्सी पर बैठतें हुएँ शंभुनाथें तिनकोड़ियौ कें अपनों जाँघों पर बैठै के इशारा करलकै, मतर बारह सालों के होय गेलों तिनकौड़ी कें हुनकों जाँघों पर बैठवो केन्हों नी लगी रहलों छेलै, जेकरा भाँपतें हुऐ हुनी कहलकै, "कोय बात नै, तोहें यही ठां कुर्सीये के हत्था सें सट्टी कें खाड़ों होय जो" तें, ऊ कुर्सी के हत्था सें एकदम सट्टी कें खाड़ों होय गेलै ।

शंभुनाथ कुछ पूछी रहलों छेलै, यही सें ओकरों ध्यान मंचों दिस नै होय कें हुनके दिस छेलै । दोनो के ध्यान तें तब्हें टुटलै, जबें ताली के गड़गड़ाहट होलै। तिनकौड़ीं देखलकै, इस्कूल के एकलौता गुरु जी बोली रहलों छेलै, "ई गाँव के सौभाग्य छेकै कि शंभु बाबू के कारण शिक्षा पदाधिकारी सिनी है गाँव ऐलों छोंत । आबें हिनका सिनी इस्कूल के कुछ छात्र सिनी सें कुछ-कुछ पुछतात, जे सही-सही जवाब देतै, ओकरा सिनी कें पुरस्कारो मिलतै ।"

आरो एकरो बाद हुनी एक-एक छात्र के नाम पुकारतें गेलों छेलै—गणेश तांती, बबलू सिंह, अजोधा कापरी, अंशु मिसिर, अठोंगर महतो, बैलू दास, कनकू सिंह ।

नाम सुनथैं ऊ छात्र मंचों के नगीच जाय आरो एक-एक साहब एक-एक करी कें सवाल पुछलें छेलै—दुनियाँ के सबसे बड़ों जंगल कहाँ छै आरो कै एकड़ में फैललों छै ? दुनियाँ रों सबसें बड़ों नदी कोंन छेकै, आरो ऊ कहाँ बहै छै ? दुनियाँ रों सबसें बड़ों रेगिस्तान कोंन छेकै, आरो ऊ कहाँ छै ? दुनियाँ रों सबसें बड़ों ताजा पानी के झील कहाँ छै? पिरामिड कोंन देशों में पैलों जाय छै ? आकाश के सबसें बड़ों ग्रह के नाम की छेकै ? वास्को द गामा कहाँ के रहैवाला छेलै ?

तिनकौड़ी बड़ी गौर सें देखें लगलै, एक-एक बच्चा कें एक-एक मिनिट समय देलों गेलों छेलै आरो एक्को बच्चा एक्को सवाल के उत्तर नै दिएँ पारलें छेलै । गणेश, बबलू, अजोधा, अंशु, अठोंगर, कैलू, कनकू, मंच सें उतरै वक्ती ऊ छोटों-छोटों कमंडलु हेनों कप कें जरूरे कोन्हराय कें देखतें लौटै, जेकरा पावै के हुलास लैकें ऊ बहुत्तें कुछ

रट्टी कें ऐलों होतै ।

जे बातों के दुख हौ बच्चा सिनी के जत्तें होय रहलों छेलै, ओकरा सें कम इस्कूल के पंडित जी आरो शंभुनाथो कें नै होय रहलों छेलै—से शंभुनाथ जल्दी-जल्दी सब सवालों के उत्तर तिनकौड़ी के कानों में फुसफुसैतें बतैलें जाय रहलों छेलै आरो आखरी में ओकरा सें हाथो उठाय दै लें कहलकै ।

फेनु की छेलै, तिनकौड़ी दोनो हाथ उठैले अगलका कुर्सी कें हटैतें-टकरैतें सीधे मंचों पर आबी कें कहलकै, ''ई सब सवालों के जवाब हम्में असकल्ले दिएँ पारौं ।''

तिनकौड़ी के बात सुनथै, इस्कूल के पंडित जी गदगद होतै बोललै, ''हों बेटा, सब सवालों के जवाब तोंही दिएँ पारै छैं ।''

कुछ उम्मीद पर ही पंडित जी हेनों बोली गेलों छेलै, हालांकि हुनका खुद एकरों भरोसों नै छेलै कि एत्तें-एत्तें बड़ों सवालों के जवाब वैं दिएँ पारतै, जबें इस्कूल के पंडित होला के बादो ई सब सवालों के जवाब की होतै—हुनियो नै जानै छेलै।

एक्को लड़कां एक्को जवाब नै दिएँ पारलें छेलै, ई बातों सें पंडित जी अपना कें बड्डी अपमानित महसूस करी रहलों छेलै, से तुरत्ते फेनु कहलकै, ''साहब जी, आपने सिनी सें निवेदन छै कि तिनकौड़ी कें बोलै के मौका देलों जाय, देर सें भले ऐलों छै, मुदा इस्कूल के सबसें तेज बच्चा छेकै ।''

साहब सिनी के इशारा पैथै, तिनकौड़ी कहलें छेलै, ''ई सातो सवाल के जवाब देला के बाद हमरो सात सवाल छै, जेकरा उत्तर हम्में गुरु-तुल्य साहब सिनी सें जानै लें चाहवै ।''

मंच पर बैठलों एक भारी भरकम साहब ने 'ठीक छै' के इशारा करलें छेलै, तें आरो साहबो नें ।

इशारा पैथैं, तिनकौड़ी घोघलों कविता नाँखी बोलें लगलै, ''दुनियों रों सबसें बड़ों जंगल अमेजन छेकै आरो जे दक्षिण अमेरिका में अरबौं एकड़ में फैललों होलों छै; दुनियाँ के सबसें बड़ों नद्दी नील

नदी छेकै, जे उत्तरी-दक्षिण अफ्रिका में बहै छै; दुनियाँ के सबसें बड़ों मरुभुमि सहारा के मरुभूमि छेकै—जे उत्तरी अीका में छै; दुनियाँ के ताजा पानी के सबसें बड़ों झील सुपीरियर झील छेकै, जे कनाडा आरो अमेरिका के बीच पड़ै छै; पिरामिड मिस्र देश में पैलों जाय छै; सरंग में सबसें बड़ों ग्रह वृहस्पति छेकै आरो वास्को द गामा पुर्तगाल के रहैवाला छेलै।''

तिनकौड़ी आखरी जवाब पर पहुँचतियै, एकरों पहिले हकीम चाचा आरो शंभुनाथ सार्थे पंडितो जीं हाथ उठाय कें आठ-दस ताली पिटलें छेलै, तें ओकरों साथे साहबो सिनी नें टेबुल कें तरहथी सें थपथपैतें वाहवाही देलकै ।

तबें छवो साहब के बीच में बैठलों प्रमुख साहब उठलै आरो कहलकै, ''वाह, ई बुतरु तें इस्कूल भरी में सबसें बेसी तेज निकललै'' फेनु तिनकौड़ी कें हाथों के इशारा सें अपनों नगीच बुलाय कें पुछलें छेलै, तोरों की नाम होलौं ?''

''तिनकौड़ी ।''

''तें, सातो पुरस्कार तिनकौड़ी कें देलों जाय छै'' साहब नें आरो-आरो अधिकारी साथे सभ्भे लोगों कें सुनैतें कहलें छेलै, ''चूँकि तिनकौड़ी असकल्ले सातो सवाल के जवाब देलें छै, यै लेली यही ई सातो सिल्ड के हकदारो छै ।'' ई कही सातो सिल्ड एक पन्नीवाला झोला में करी कें ओकरा थमैतें फेनु कहलकै, ''आबें बोलों—तोहें की पूछै लें चाहै छौ ?''

बायां हाथों में पन्नीवाला झोला कस्सी कें थामलें तिनकौड़ीं एक दाफी सातो साहब दिस देखलकै, फेनु हकीम साहब, शंभुनाथ आरो पंडित जी दिस—जेना वैं जानै लें चाहै छेलै कि हमरों सवाल पुछवों ठीक होतै की नै ?

कि तखनिये वही साहबें कहलकै, ''अरे, संकोच कथी के, पूछों-पूछों, जे पूछैलें चाहै छों ! तोरों सातो सवालो के जवाब हमरा सिनी मिली कें देभौं, जरूर देभौं ।''

''हों, हों, की पूछै लें चाहै छों ? पूछों ! जे साहबे कही रहलों छौं, तें कथी के संकोच ?'' कुर्सी पर बैठले-बैठले शंभुनाथें हाथ सें पूछै के इशारा करतें कहलकै। ई तें हुनकौ नै मालूम छेलै कि आखिर तिनकौड़ी पूछै लें की चाहै छै ।

जबें वैं देखलकै कि शंभुएनाथ इशारा करी रहलों छै, तें वैं साहब सिनी दिस मुँह करतें कहलकै, ''हम्में आपने सिनी सें जानै लें चाहै छियै कि ''धनसा कोनी लोकगाथा के पात्र छेकै, आरो जंगल में आग लगाय कें केकरों पूँछ काटलें छेलै ?''

ओकरों सवाल हेने छेलै कि मंच पर एकदम सें गुम्मी फैली गेलै। सब साहबें एक दुसरा कें मुँह देखलें छेलै; जों कुछ मुस्कैलों छेलै, तें इस्कूल के पंडी जी साथें हकीम चाचा आरो शंभुनाथो ।

मंच कें शांत देखी तिनकौड़ीं दोसरों सवाल करलकै, ''विसुरौत के साँढों के की नाम छेलै ?'' ई प्रश्न सुनी कें तें शंभुनाथ, हकीम चाचा आरो पंडी जी तीनो मुड़ी गोती कें हँसलों छेलै, मतर मंच पर ओकरों सें बेसी सन्नाटा छेलै।

कुछ देर रुकी कें तिनकौड़ीं फेनु कहलकै, ''हम्में तेसरों बात जानै लें चाहै छियै कि जागोशाही आरो लक्खी शाही कोंन जिला के छेलै?'' जेना ओकरा मालूमे रहें कि यहू सवाल के जवाब साहबे सिनी नहियें दिएँ पारतै, से वैं लगले पुछलें छेलै, ''भगीरथ माँझी कहाँकरों छेलै, आरो आजादी के लड़ाय में कोन आंदोलन चलैलें छेलै ?''

शंभुनाथें गौर सें देखलें छेलै कि हेड साहब सें लैकर आरो सिनी अपनों-अपनों अंगुली सें एक-दोसरा के केहुनी छुवी-छुवी कें सवाल के जवाब जानै लें चाही रहलों छेलै आरो हुन्नें तें तिनकौड़ी सवाल पूछै लें जेना धड़पड़। आव नै देखलकै ताव, पँचमों-छठमों सवाल लगले-लगले पूछी बैठलै, ''शहीद सतीश झा केरों बाबू के की नाम छेलै ? आरो शहीद महेन्द्र गोप कोंन गीत हमेशे गैतें रहै छेलै, ऊ गीत कोंन छेकै ?''

ई प्रश्न सुनी कें नै खाली साहबे सिनी बलुक शंभुनाथो सोच में पड़ी गेलों छेलै; जे मुस्कान केकरो ठोरों पर छेलै, तें पंडित जी के

ठोरों पर ।

शंभुनाथ सोचें लगलों छेलै कि एकरों दुष्प्रभाव कहीं इस्कूली के पंडित जी पर नै पड़ें । अभी हुनी कुछ सोची कें तिनकौड़ी कें नीचें उतरै के इशारा करवे करतियै कि वैं सातमों सवाल करलकै ''बहबलपुर नाथनगर रों राजेन्दर चाचा के पूरा नाम की छेकै आरो हुनी कोंन शहीदों के इतिहास लिखलें छै ?''

सौंसे इस्कूल में जना भंक लोटें लगलों छेलै, सब साहब के चेहरा देखै लायक होय गेलों छेलै आरो बारह साल के होय गेलों तिनकौड़ी; जना हठाते बीस-इक्कीस सालों के कोय नवतुरिया नेता । वैं दायां हाथ के शिल्डवाला झोली बायां हाथ में लेतें कहलें छेलै, ''क्षमा करियै, जबें एक छोटों-टा इलाका के इतिहास-भूगोलों के ज्ञान आपने सिनी कें नै छै, तें दुनिया भर के ज्ञान हमरा सिनी कें की होतै आरो दुनियाँ के बात जानिये कें की होतै, जबें अपनों घरो के बारे में हमरा पतै नै रहें । दुनियाँ कें जानै के पहिलें गाँव-घर, देश-प्रदेश कें जानना जरूरी छै । आरो आपने सिनी जों हमरों इलाका के बात पुछलें होतियै, तें है सिनी पुरस्कार हमरा नै, हमरों दोस्त के हाथों में होतियै । हम्में यही सवाल आबें दोस्त सिनी सें पूछै छियै, आरो देखियै, जवाब दै छै की नै ।''

ई कही वैं गणेशी, बबलू, अजोधा, अंशु, अंठोगर, कैलू, सें वही सवाल सिनी सवाल एकेक करी कें पूछना शुरू करलकै, तें हुन्नें सें फटाफट जवाबो आनौ शुरू होय गेलै, जे देखी सब साहबो दंग रही गेलै।

एकरों बाद तिनकौड़ी साहब सिनी के सम्मुख दोनो हाथ जोड़ी आरो सर झुकैतें कहलें छेलै, ''आपने सिनी सें निवेदन छै कि है सब शिल्ड ऊ सिनी छात्र कें दै दियै, जे मंच पर कुछ देर पहलें छेलै ।'' ई कही कें वैं शिल्डवाला झोली साहब सिनी के आगूवाला बेंचों पर राखी देलें छेलै ।

आश्चर्यचकित हेड साहबें तिनकौड़ी के माथा पर हाथ फेरलें एक-एक करी कें गणेशी, बबलू, अजोधा, अंशु, अठोंगर, कैलू, कनकू कें

बुलैलें छेलै; शिल्ड देलें छेलै; खूब ताली के गड़गड़ाहट होलों छेलै आरो जबें सब कुछ समाप्त होय गेलों छेलै, तबें हेड साहबें कहलें छेलै, ''हम्में तिनकौड़ी के भी पुरस्कृत करै लें चाहै छियै, जेकरों प्रतिभा सें हम्में चकित छी । मतर एकरों पहिले नियम के मोताबिक एकरा सें एक्के प्रश्न सही, जरूरे पूछवै ।''

ई कहै वक्ती खाली साहबे के चेहरा पर प्रसन्नता नै छेलै, तिनकौड़ियों के चेहरा बिजली-नाँखी छिटकी रहलों छेलै । साहबें इशारा सें ओकरा एकदम नगीच बुलैलै छेलै आरो ऐला पर पुछलें छेलै, ''तोहें एत्तें-एत्तें जानकारी केकरा सें पैलों छौ ? के बतावै छौं, तोरा एत्तें-एत्तें बात ?''

तें, तिनकौड़ी एक क्षण चुप रहला के बाद बोललै, ''ई सब बात बतावै छै हमरों बाबू, गाँव के हकीम काका, गुलाब काका, यानी भैरो मिसिर बाबा, इस्कूल के गुरु जी, शंभुकाका सें लैकें एकेक आदमी'' फेनु वैं आकाश-बँसबिट्टी दिस देखतें कहलें छेलै, ''है सरंग सें, बँसबिट्टी सें, नद्दी सें, रौद सें, हवा सें, गाछ के हिलवों सें, झड़ी-पानी सें, खोटा सें, पिपरी सें—धुरदा-माँटी सें ।'' आरो ऊ एकदम चुप होय गेलों छेलै ।

हेडसाहब सें भी कुछ बोललों नै गेलों छेलै—बस अपनों उपरलका जेबों सें दू पनसोइया टाका निकाली कें ओकरों कमीज के ऊपरलका जेबों में रखतें कहलें छेलै, ''जे गाँव में हेनों विद्यार्थी छै, ऊ गाँव कें तक्षशिला, विक्रमशील, नालन्दा हुऍ सें कोय नै रोकें पारें ।'' जे सुनी कें आरो साहबे नै, हकीम चाचा, पंडित जी आरो शंभु नाथो जोरों-जोरों सें ताली देर तांय बजैतें रहलों छेलै ।

■

अड़हुल बाबू रों मास्टरी

'अरे, ई घुटना सें खून केना निकललौ ?'' बटोही के पुछलौ पर जबें बालो कुछ नै बोललै, तें वैं दोबारा पुछलकै, ''अरे, बोले छैं कैन्हें नी, कहीं ईटा-पत्थर पर गिरले की ?''

तें बालो चोट के नगीच मुँह लानी कें दू दाफी फूँक मारतें कहलकै, ''हो, झिकटिये सें चोट लगलों छै, बड़ी कस्सी कें । जोगबारी काकां टेवी कें मारलकै ठेहुना पर ताकि चोट खाय कें हम्में गिरी पड़ौं, आरो हुनी आवी कें हमरा धरी लें । खाली कम सूझै के बहाना करै छै। सब सूझै छै, हुनका ।'' एतना सुनी बटोहीं, सामनाहै के कुकरौंधा पत्ती तोड़ी कें लै आनलों छेलै आरो दायां हाथ के चुटकी में खूब रगड़ी कें रस घावों पर गिराय लेलकै। रस गिराना छेलै कि घाववाला गोड़ों कें मोड़ी एक्के टाँगों पर बालो घूमें लगलों छेलै; पड़पड़ाय कें रस जे लगलों छेलै । लहर कें कम करै के कोशिश में वैं दू-चार दाफी लम्बा-लम्बा आऽऽऽ, आऽऽऽ करलें छेलै ।

''बस-बस; बूंद गिरलै नी, देखियै की रं घाव तुरत्ते चोखावें लागै छै ।'' ई कही कें बटोहियो ओकरों घावों पर चार-पाँच फूँक मारी देलें छेलै, ''बोल, लहर कम बुझावै छौ की नै ?''

लहर कम होलों छेलै कि ने होलों छेलै—ई तें अलग बात छेलै, मतर बटोही के है रं घावों पर फुकला सें वैठां शीतल रं जरूरे बुझैलों छेलै, से वैं कहलकै, ''हों, कुछु-कुछ लहर कम हेनों लागै छै, कोय बात नै, आबें ठीक होय जैतै, मतर जोगबारी काकाहौ कें मजा चखाय कें राखवै, हमरा झिटकी मारी कें चोटैलें छै, हम्में डिग्गा मारी कें हुनका घायल नै करी देलियै, तबें कहियैं ।''

''मतुर है काम तोहें अकेले नै करवे ।''

''तबें ई कामों में हमरों साथ के देतै आरो कैन्हें देतै ?''

''अरे कोय दौ कि नै दौ, हम्में देभौ । तोरा नै मालूम, पोरकां हम्मु कबरंगा तोड़ै लें बगीचा में घुसलों छेलियै । घुसलों तें छेलियै, दम साधिये के आरो दम साधले गाछों पर चढ़लों छेलियै, मतुर गोड़ तें गोड़े छेकै, कोय ठारी सें लगी गेलों होतै । आबें ठारी सें गोड़ लगतै, तें पत्तो सिनी खड़खड़ैवे करतै । की कहियौ—पत्ता के खड़खड़ैवों होलै, कि जोगवारी काका के ठोठों भैंसा-रं शुरू । सोचलियै, काका पकड़ै लें दौड़तै, तें बगीचा के द्वारिये दिस नी—से हम्में छोटका भीती दिस छड़पनिया दइयेवाला छेलियै कि झिटकी एड़िया में आबी कें ठांय सें लगलै । हौ तें समझें कि हम्में दीवार छड़पी चुकलों छेलियै; जो हेनों नै करी के बगीचे दिस चोटों के कारण ससरी जैतियै, तबें काकां की करतियै, ऊ तें हम्मी समझै छियै । नहियो कुछ करतियै, तें एतना तें जरूरे नी करतियै कि पकड़ी कें या तें गुरुजी लुग लै जैतियै, या फेनु बाबुए लुग आरो तोरा मालूमे छौ, दोनो में सें कोय कम नै छै । हुएँ सकै छै, एक्के कबरंगा के कारण हम्में दोनों सें पिटैलों जैतियै, इस्कूली में खजूरी के छड़ी सें आरो घरों में निसुआड़ी के डंटी सें'' एतना कहतें वैं फेनु बालो के घाव दिस इशारा करतें कहलें छेलै, ''तोरों घाव तें नाखुनो भरी के नै छौ; हमरों तें अंगुरी भर ठेहुनों छिलाय गेलों छेलै, मतुर नै तें, घाव के बारे में आरो नै तें दरद के बारे में माय-बाबू कें जानै लें देलियै, घरों के बाहरे हिन्ने-हुन्नें करतें रहैलियै ताकि माय-बाबू है देखी लें कि हम्में घरे में छियै, जबे गोधुली कारों हुएँ लगलों छेलै, तें चुपचाप गोड़-हाथ धोय कें पढ़ै लें बैठी गेलियै। घाव तें चोखाय गेलों छै, मतर दरद जेना अइयो ठेहुना में घुरतें रहें—यहें लागै छै । यही वास्तें कहै छियौ कि बदला ले, तें हम्में तोरों साथ देभौ, कोय दौ कि नै दौ ।''

''मतुर है कामों में हम्में तोरा साथ नै लिएँ पारौं ।'' बालों कुछ सोचला के बाद कहलकै ।

''से कैन्हें ?'' बटोही आँख कें बड़ों-बड़ों करतें बोललै ।

''ऊ यै लेली, कि तोरा जबें कोय पकड़ै लें बहियावै छौ, तें चुपचाप भागै के बदला तोहें चिचियैलें भागै छै—भाग रे । मानी ले, तखनियो जोगवारी काका सें बचैलें तोहें चिचियाय कें भागलैं, तें सब भेद खुलिये नी जैतै । काका केकरों आवाज नै पहचानै छै, बूढ़ों सें लैकें बच्चा तांय कें । जहिया सें अन्हरों होलों छै, काने सें आँखी कें काम लै छै ।''

''अरे, ई बात की हरदम्मे होय छै, कभियो-काल होय गेलों होतै।'' बटोही हँसतें कहलकै ।

''यही सें बोलै छियौ, कि हम्में तोरा साथ नै रखें पारौं । हम्में जानै छियै नी कि गुलेली के चोट कैन्हों होय छै । यही सें बच्चो के हाथों में गुलेल देखी बन्दरवो सिनी केन्हों छलाँग दै भागै छै । हम्में शिव काका के आम-बगीचा में देखलें छियै नी । आरो सोचैं, जबें गुलेल के गोली काका के गाथा आकि चोका सें आँखी में लगी गेलै, तबें की होतै ! माथा आकि आँख पर नहिये सही, देहे पर कन्हौ कें लगी गेलै, तें टेटनों साथें खून दर्र-दर्र बहै नी लगतै—नै, तोरा नै लै जावें पारौ आरो की समझै छै—है बात नै खुलतै, खुलतै तें खुलवे करतै, तखनी जोगवारी काका के देहों पर तें एक टेटनो होतै, आरो हमरों देहों पर बाबू के मार सें पक्का पचास टेटनों । नै, नै, तोरा साथ नै रखें पारौं। हम्में जोगवारी काका सें बदला एकल्ले लेवै ।''

''तें, ठीक छै । पैहिलें तोरों घाव तें ठीक होय जाव ।'' ई कही कें बटोही बालो के घावों पर महीन धुरदा उठाय कें राखी देलें छेलै, आरो वैठां सें खिसकी गेलों छेलै ।

कि तखनिये बालो नें बटोही कें नाम लैकें बुलैलें छेलै; कहलें छेलै, 'जोगवारी का सें बदला लैके बात तें हम्में हेन्हैं कें कही देलें छेलियौ, ई केन्हों कें हुएँ पारें की ? हरगिज नै आरो तोहें जे कुछ बोली गेलै, वहू भूली जो । जों है बात केन्हौ कें केकरो मालूम होय गेलै आरो बात हमरों बाबू तांय पहुँचलै, तें हमरों जे हाल होतै, ऊ तें होवे करतै,

है नै सोचें कि तहू बचें पारवे । बाबू के गोस्सा जानवे करै छैं, तोरों बाबुए लुग तोरों कान-हाथ अमेठी कें लट्टू बनाय देतौ, फेनु महीना भरी घरों में हरदी लगवैतें रहियें ।''

बालो के ई बात सुनी कें बटोही भीतरों सें सिहरी गेलै । ओकरों सामना में बालो केरों बाबू के चेहरा घूमी गेलै—भैंसी के सींग नाँखी घुंघरैलों मूँछ आरों बड़का कौड़ी-रं नाँचतें आँख, होन्हे छाती चौड़ा, जेना पुट्ठों-पीठ रहै । ओकरा यहू याद ऐलै कि दिनेश बाबां ऊ दिन केना बच्चा सिनी कें बताय रहलों छेलै कि कना हुनी कुछ सोचलें जाय रहलों छेलै कि तभिये भैंसा अपनों सींग नीचा करलें हुनकों पीछू दौड़लै । हौं तें एक लोहा-खंभा के पीछू धूरा पर हुनी गिरी पड़लै, जहाँ भैसा घुसै नै पारै छेलै, नै तें की होतियै, नै कहें पारौं । ई सब याद करत्हैं बटोही डरी गेलै आरो दोनों कान पकड़तें कहलकै, ''हम्में कथी लें केकरो कहवै, कहीं तोहीं नै बोली दियैं, आरो आपनें साथें हमरौ नै मार खिलाय दियैं ।''

''तें, ठीक छै, है बात यही पर खतम ।'' ई कही कें बालों अपनों घरों दिस बढ़लै आरो बटोही अपनों घरों दिस ।

असल में बालो बिना केकरो जानकारी देल्हैं, हौ काम हेना करी गुजरै लें चाहै छेलै, कि केकरो भनको नै लागै आरो ओकरों खपड़ावाला डिग्गा काम करी जाय । है सबकें मालूम छै कि बालो जखनी रिंगाय के डिग्गा जेकरा पर फेकी दै, तें हौ निशाना कभियो खाली जावै नै पारें ।

आरो एक दिन ऊ इस्कूल नै जाय के बहियारिये-बहियार होलें बगीचा दिस बढ़ी गेलों छेलै । घरों में माय के एतन्है कहलें छेलै कि आय इस्कूली में पढ़ाय-उढ़ाय नै होतै, खाली सवाल-जवाब होतै, से बस्ता-बोरिया ढोय कें नै जाना छै आरो ई कहला के बादे नुकाय कें रखलों सात डिग्गा में सें दू ठो निकाली कें वैं अपनों पैंट के दोनो जेबी में रखी लेलें छेलै, फेनु सबसें आँख बचैतें ऐंगना होलें निकली गेलों छेलै ।

ओकरों बाबू घरों में होतियै, तबें नी डोंर होतियै, हुनी तें

आय भोरे-भोर मोटरगाड़ी पकड़ै लें गाँव के सीमाना पर पहुँची गेलों छेलै, जे घरों के बाहरीवाला बरामदाहै सें देखलों जावें सकै छेलै । बालो तब तांय बरामदे पर ठाड़ों रहलों छेलै, जब तांय मोटरगाड़ी नै ऐलों छेलै आरो गाड़ी रुकला के बाद बाबू कें चढ़तें नै देखी लेलें छेलै । आबें ऊ निश्चिन्त छेलै, कि बाबू शहर सें घुरवो करतै, तें दोपहर जरूरे होय जैतै आरो वैं तें एकरों पहिले जोगवारी काका कें चोटाय देलें होतै । यही सोची कें बहियार सें निकलथैं ऊ सीधे बगीचा दिस सिधियाय गेलों छेलै।

अभी बगीचा दू बाँस दूरे होते कि बालो अपनों बाबू कें वहा दिस सें ऐतें देखलकै । बाबू कें देखथैं, ओकरों सिट्टी-पिट्टी गुडुम होय गेलै । एक दाफी तें ओकरों यहा मोंन होलै कि हिन्नें-हुन्नें बिना करले सीधे घोंर दिस उड़ान दै दौं, मतुर तखनिये ओकरों मनों में यहू ऐलै कि एकरा सें बाबू के मनों में हुएँ-नें-हुएँ, यहा शंका होतै कि जरूर कोय गलत करै लें हम्में जाय रहलों छेलियै, नहिये चोटाय वाला बात सोचें, मतुर आम झड़ायवाला बात तें जरूरे सोची लेतै, आरो यहा सोचवों की कम होतै, हमरा डंगाय दै वास्तें—से भागै के बदला, ऊ वहाँ ठां खाड़े रही गेलै ।

अड़हुल बाबू एकदम नगीच आवी गेलै, ओकर्है हैरत सें देखतें हुए आरो बालो कुछ नै देखी कें खाली बाबू के आँखें देखी रहलों छेलै, ऊ आँखी में गोस्सा छै कि दुलार—एकरा पहिचाने के कोशिश करी रहलों छेलै ।

आरो अड़हुल बाबू कें आचरज होय रहलों छेलै कि आखिर वैं, हेना कें कैन्हें हुनका ओकरा देखी रहलों छै; जरूरे कोय बात होतै—या तें घरों सें कोय बात लैकें भागलों छै आकि कोय दोस्त सें मिलै लें हिन्नें निकली ऐलों छै । जे भी होतै, आबें सब बात घरे में पुछलों जैतै—ई सोची कें हुनी बालो कें अपनों बायां कंधा पर उठाय कें ओकरों बायां हाथ पकड़ी लेलकै आरो सीधे घरों दिस बढ़ी गेलै ।

रस्ता में नै अड़हुल बाबूं ओकरा सें कुछ पुछलें छेलै, नै बालो

ही कुछ बोललों छेलै । ऊ भला बोलतियै की, ऊ तें सोची रहलों छेलै कि घोंर पहुँचला पर जबें बाबू पूछतै कि हुन्नें तोरों कोय दोस्त तें नै रहै छौ, तबें हुन्नें कैहिनें जाय रहलों छेलैं—तखनी वैं की जवाब देतै? ई तें बोलै नै पारौं कि आम तोड़ै लें जाय रहलों छेलियै, तबें तें देहों के सब गरदा साफे छै ।

आरो ई बातों के खयाल ऐत्हैं ओकरा अपना जेबी में पड़लों खपडा के डिग्गा सिनी के याद ऐलै, तें सोचें लागलै—'हुएँ सकै छै, कैन्हौ कें बाबू के हाथ सें डिग्गा छुवाय जाय, तें रास्ताहै सें कहीं तड़ातड़ शुरू नै होय जाय, बाबू कै बार मना करी चुकलों छै कि जों कभियो है झिकटी-टिकटी सें खेलतें देखलियौ, तें बुझियें—बाबू के ई बात याद ऐथैं, बालों दायां जेब में पहलों डिग्गा कें हौले सें निकाली कें नीचें गिराय दैकें बात सोचलकै, जैठां ढेर बालू रहें कि गिरला पर कोय आवाजे नै हुएँ ।

मतर वैं डिग्गा कें जेबों सें निकालतियै केना, दायां हाथ तें बाबू के बायां हाथ के कब्जा में छेलै, जेकरों कटियो-टा हिलवो-डुलबों संभव नै छेलै । वैं एक दाफी छुट्टा हाथ कें पैंट के बायां जेबी दिस आहिस्ता सें घुमैलकै, तें अड़हुल बाबू बोली पड़लै, ''ई कंधा पर बैठे में दिक्कत होय छौ, तें कोय बात नै'' आरो एतना कही हुनी दोनो हाथों सें ओकरा उठैतें दायां कंधा पर बिठाय कें दोसरों हाथों सें ओकरों दोसरों बाँही कें पकड़ी लेलकै ।

बालो कें जानों में जेना जान आवी गेलों रहें, है रं कंधा बदलै में नै तें डिग्गा के टकराय के आवाज होलों छेलै, नै जेबी में ओकरों होय के आभासे ओकरों बाबू के मिललों छेलै । एकरों बाद तें कटियोटा वैं उकुस-पुकुस नै करलकै।

जखनी अड़हुल बाबू नें ओकरा घरों के दुआरी पर कंधा सें उतारलें छेलै, ओकरों ध्यान वही बातों पर छेलै कि काहीं जेबी के गोटी टकराय कें आवाज नै करी बैठै, पर अबकियो दाफी भागे ओकरों साथ देलें छेलै । ओकरों हाथ पकड़ले-पकड़ले अड़हुल बाबू ऐंगना आवी गेलों

छेलै आरो खटिया पर उतारी कें आपने सामनावाला कोठरी में पिन्हलों कमीज उतारै लें चल्लों गेलै ।

बालो नें कोन्हराय कें बाबू के देखलकै। वैं सोची रहलों छेलै कि बाबू केन्हों कें कोय कामों में जरियो-टा फँसें कि वैं जेबी के गोटी कें दूर फेकी दै, मतुर कमीज उतारी कें हुनी सीधे ऐंगना आवी गेलों छेलै आरो वहा खटिया पर गोड़ लटकैतें बालो दिस होतें पुछलें छेलै, "अच्छा बालो, आबें सच-सच बताव कि आखिर हुन्नें जाय कहाँ रहलों छेलैं ? तोरो दोस्त बटोही तें..."

असल में हुनी है कहै लें चाहै छेलै कि बटोही कें तें इस्कूली दिस से ऐतै रास्ता में देखलें छियै, तें असकल्ले बालो कन्नें जाय रहलों छेलै मतुर बटोही के नाम सुनत्हैं बालो के कान खाड़ों होय गेलै आरो बिना आगू कुछ सुनले वैं बाबू कें ओरी सें अंत तांय सब कथा सुनाय देलकै कि केना हौ दिन जोरों के हवा उठलों छेलै आरो ऊ एक-दू फजली आम के लोभों में, बिना जोगबारी काका के कुछ बतैलें, बगीचा में घुसी गेलों छेलै । नै जानौं केना काका कें पता चली गेलै आरो हमरा पर हेनों गिट्टी चलैलकै कि ठेहुना सें खून निकलें लागलै ।"

बालो नें पैंट कें ठेहुना सें ऊपर करी कें ऊ जग्घो दिखैलें छेलै, जहाँ पर अभियो घाव के चेन्हों छेलै ।

"तें, आय फेनु हौ दिस कथी लें जाय रहलों छेलैं ?"

"काका सें बदला लै लें ।" बालो बिना कुछ छिपैले बोललै ।

"बदला लैलें ?" अड़हुल बाबू के आचरज के ठिकानों नै रही गेलों छेलै । हुनकों दोनों आँख फैली कें रही गेलै आरो वहा हालतों में पुछलकै, "जोगवारी का सें बदला लेतियै ? ऊ केना कें ?"

आरो बालों ई बात तें जानिये गेलों छेलै, कि ओकरों पीठी पर बाबू के जे धौल बरसना छै, ओकरा सें आबें मैय्यो आवी कें बचाय लें चाहें, तें मुश्किल–से वै कपसवों आरो तेज करी कें कहलकै, "डिग्गा रिंगाय कें मारतियै ।"

बालो के एतना बोलना छेलै कि अड़हुल बाबू के नजर ओकरों

पैंटों पर पड़लै आरो झट सना अपनो दोनो हाथ ओकरों दोनों जेब पर ससारलकै। हुनकों अनुमान सहिये निकललै । दायां जेबी में खपड़ा सें बनैलों गोल-गोल डिग्गा होय के पता बाहरे सें लगलै ।

तें, हाथ घुसाय कें डिग्गा निकाली लेलकै आरो फेनु सें पुछलकै, ''तें, तोहें काका कें यहा डिग्गा सें कपाड़ आकि ठेहुनों फोड़ै लें जाय रहलों छेलै ? बिना है जानले कि हुनी तोरा जानी-बुझी कें कभियो नै मारलें होतौ आरो तोरो है रं डिग्गा कें चलैला सें हुनकों कपाड़ की, हुनकों आँखो फूटें पारै छेलै ?''

बालो कें तें यहा लगलों छेलै कि ओकरों बात सुनथैं बाबू के धौल पकलों ताड़ नाँखी भद-भद ओकरों पीठी पर गिरें लगतै, मतुर ऊ जग्घा में बाबू के नरम पड़तें देखी कें ऊ कपसत्हैं होतें बोललै, ''नै, काकां जानी-बुझी कें हमरा पर गिट्ठी चलैलें छेलै । हुनका केना मालूम होलै कि हम्में पछियारिये वाला दीवार छड़पी कें भागवै, जबकि हुनका बहुत कम सुझाय छै !''

अड़हुल बाबू बालो कें कुछ कहै के बदला ओकरों जेबी सें निकाललों डिग्गा वहा रं ओकरों जेबी में रखी देलकै आरो अलगनी सें गमछी उतारी कें अपना कंधा पर रखी लेलकै, तखनी हुनकों देहों पर हत्थावाला कमीज छोड़ी कें आरो कुछ नै छेलै, जे हुनी कमीज उतारला के बाद पिन्ही लेलें छेलै ।

कंधा पर गमछा रखना छेलै कि हुनी बालो कें फेनु सें बायां कंधा पर उठैलकै आरो बगीचा दिस लम्बा-लम्बा डेग मारना शुरू करी देलकै ।

बालो के कानवों बंद होय गेलों छेलै । वैं समझै नै पारी रहलों छेलै कि आखिर बाबू डंगाय के बदला ओकरा बगीचा दिस कैन्हें लै जाय रहलों छै; फजली आम दिलैतें, एकरों तें कोय सवाले नै उठै छै । तबें यहा हुऍ सकै छै कि बाबू आरो काकां एक्के साथ हाथ घुरावें पारें—यहें लेली बाबू हुनकों नगीच लै जाय रहलों छै । ई सोचत्हैं ऊ एक दाफी जरूरे सिहरलों छेलै, मतुर देह-हाथ कड़ा करलें होने बैठले रहलै । कुछु

नै बोललै । सोचलें छेलै—कुछु बोलै के मतलब छै कि काकां तें बाद में धुनाटतै, बाबू अभिये सें शुरू होय जैतै—यहू डरें ऊ गुम्मी साधी लेलें छेलै ।

अड़हुल बाबू जे रं झपटी-झपटी कें चली रहलों छेलै, वैसें हुनी पाँच बाँस के दूरी कें ओतने देरी में नाँपी लेलकै, जत्तें देरी में एक बाँस के दूरी नाँपलों जावें पारें ।

बालो कुछ आरो बात सोचतियै कि अड़हुल बाबूं जोरों के हाँक देलकै, ''जोगबारी भाय छौ, हो ?''

''अहो, अड़हुल दादा, हों बगीचे में छियै । आवै छियौं ।''

''आवै के काम नै छै, हम्मी आवी रहलों छियौं । तोहें वहीं खटिये पर बैठलों रहों ।'' कहतें-कहतें हुनी बालो के कंधा सें उतारी देलें छेलै आरो साथे लेलें बगीचा के टटिया हटैतें भीतर घुसी ऐलै । हुनकों चलै सें सुखलों पता सें भरलों बगीचा खर्र-खर्र के आवाज से भरें लगलै, जे आवाजों के पहचानथैं जोगबारियो काका खटिया सें उतरी खाड़ों होय गेलै ।

''अरे जोगवारी भाय, तोहें खटिया सें कथी लें उठी रहलों छों, बैठों, बैठों, हम्मू खटिये पर बैठैवाला छियै । तोरों खटिया के पौआ-पासी तें एत्तें मोटों-मोटों छौं कि हाथियो बैठी जाय, तें टूटैवाला नै । लगै छै सीधे गाछिये कें काटी-कूटी पौआ-पासी बनाय लेलें छौ ।''

ई बातों पर नै खाली अड़हुले बाबू मतुर जोगबारियो काका ठठाय कें हाँसी पड़लों छेलै आरो फेनु हुनका बैठै के इशारा करतें जोगबारी काकां पुछलें छेलै, ''बोलो भाय, हमरों याद केना पड़लौं, बोलाय लेतियौ, हम्मी आवी जैतियै ।'' आरो हुनकों बैठला पर आपनों ई कहते हुएँ बैठी गेलै, ''की दादा, अचार-उचार बनाय लें कच्चा आम के जरूरत छौं, तें केकरौ भेजी देतियौ ।''

''हों भाय, आम के जरूरत छै, बस दू-तीन फजली आम के ।''

''की मजाक करै छौ दादा, एक चंगेरा आइये भेजवाय देवौं ।''

''नै, नै, हमरो वास्तें नै, हमरों ई बेटा बालो वास्तें ।''

''ओ, बालो-बेटा भी साथ ऐलों छै ।'' जोगबारी कां अड़हुल बाबू के पीछू में नुकियैलों बालो कें अपनों ओर लेतें कहलकै, ''दादा, हौ केना में लग्घी होतै, तोहीं तोड़ी कें दै दौ । तोहें तें हमरों आँखी के बारे में जानवे करै छौ । है गाछो-बिरिछ आबें धुवैन्नों-धुवैन्हों हेनों दिखावै छै ।''

''तबें तोहें भगाय लें ऊ लड़का सिनी पर केना झिटकी चलैतें होभौ, जे तोरों बगीचा में आम तोड़ै ले घुसी जैतें होथौ ?''

बालो आबें एकदम इस्थिर होय गेलों छेलै, जना ओकरों भीतरी सें पहिलको डोंर निकली गेलों रहें । ओकरा ई विश्वास होय चुकलों छेलै कि आबें ऊ नै तें बाबू सें मार खैतें, नै बाबूं जोगबारी काका सें मार खिलाय लें लानलें छै । सब बातों सें निश्चिन्त वैं काका के मुँह ताकें लगलै कि आबें हुनी की कहै छै ।

जोगबारी काका अपनों कान्हा पर रखलों लाल गमछी लेलें छलै आरो दोनो आँख कें बारी-बारी सें पोछतें कहलें छेलै, ''की कहियौं दादा, आबें ई आँखी सें कुछ लौकै छौं की ? जो बगीचा में खड़खड़ होलौं, तें हम्में समझै नै पारै छियै कि खड़खड़हट कथी कें छेकै । बेसी डोंर तें बानरे के रहै छै, से झिटकी कोय गाछी दिस नै फेकी कें, वह दिस फेकी दै छियै, जन्नें सुखलों पत्तों, लकड़ी, टीन फेकलों रहै छै । सोचै छियै टीन-टान के आवाज सुनी कें बानर भागी जैतै, फेनु हौ दिस के दीवारो उच्चों छै, से हुन्नें सें बच्चा के आवै-जाय के सवाले नै छै। हम्में जानै छियै कि कभियो टिकोला-आमों के लालचों में कोय बच्चा टटिया दिस सें आवें पारें, से हौ दिस तें हम्में भूलो से कभियो झिटकी-झटका नै फेकलौं । बेसी तें फजलिये आम वास्तें बच्चासिनी बगीचा में घुसी आवै छै आरो एक-दू ठो लइये जाय छै, तें की । सोचै छियै, केन्हौ कें तें बच्चा हमरा सें खुश होलै । मिसरी-लेमनचुस तें नहिये नी दिएँ पारै छियै, दादा ! यही सही ।'' ई कही काका एक क्षण लेली रुकलों छेलै, फेनु कहलकै, ''हौ कोना में मौनी धरलों छै आरो वही में पाँच ठो फजली आमो छै । बिहानिये तेज हवा सें गिरलों छेकै।

ऊ तें खटिये नगीच गिरलै, तें टकटोरी कें चुनी लेलियै, आरो ऊ कोना में राखी देलें छियै, बालो बेटा, जा; सबटा जेवी में भरी ला आरो हाथो में लै लियों ।''

बालो अपनों जग्घा सें कटियो टा नै हिललों-डुललों छेलै, तबें अड़हुले बाबू उठलों छेलै आरो वैमें सें एक आम उठाय कें लै आनलें छेलै आरो बालों कें थमैतें ओकरा अपनों कंधा पर उठाय, जोगबारी काका सें कहलें छेलै, ''ठीक छै, जोगबारी भाय, ओत्तें आम की करवै, बस बालो वास्तें एकठो लेना छेलै, लै लेलियै । आबें चलै छियौं ।''

''ठीक छै, दादा ।''

बालो के दायां हाथ में कच्चा फजली आम छेलै आरो दोसरों हाथ बाबूजी के बायां पंजा में । बाबु के कंधा पर बैठलो ऊ अभियो कुछ नै बोली रहलों छेलै, तें अड़हुल बाबुए ओकरों दिस मूँ ऊपर करतें बोललै, ''देखलैं नी बालो, आय तोरा सें कत्तें बड़ों गलती होय जैतियौ। बिना सोचलें-विचारलें केकरो बारे में कोय खराब बात नै सोची लियों, वहू में जे तोरा सें बड़ों रहें आरो कोय चीज चोराय कें की लेवों । तबें तोरा में आरो चोरों में अंतरे की रही गेलै ! सोचें, आय तोहें जों ऊ गलती करी बैठतियैं, तें हम्में की करतियै, यहा करतियै नी कि जोगबारी के नगीच अपनों गल्ला में गमछी डाली कें माफी माँगतियै । बोलें, ई अच्छा होतियै ?''

बालो कुछ नै बोललों छेलै मतर अड़हुल बाबूं देखलकै, ओकरों आँखी में लोर छेलै आरो दोनो ठोर कपसै लें पटपटावें लगलों छेलै, तें अड़हुल बाबूं ओकरा कंधा सें नीचें उतारी देलकै आरो आम कें अपनों हाथ में लेतें बोललै, ''आबें तेज-तेज चली कें घोंर तक चलना छै; देखना छै, पहिले के पहुँचै छै'' आरो ई कही अड़हुल बाबू मलकी-मलकी घोंर दिस डेग बढ़ावें लगलै । तखनी सब कुछ भुलाय कें बालो भी सरपट घोंर दिस दौड़ी पड़लै, बाबू सें पहिले घोंर पहुँची जाय लें । आबें ओकरों चेहरा एकदम खिली ऐलों छेलै ।

■

दंड

केशो गुरु जी कें इस्कूली के एक्को बच्चा खाली 'गुरु जी' कभियो नै बोलै, जबें भी हुनकों बारे में कोय बच्चा कें कुछ बोलना रहै, तें आगू में मरखन्ना विशेषण लगैय्ये कें बोलै। आबें इस्कूल भर हुनकों असली नाम भुलाय कें हुनका मरखन्ना गुरु के ही नामों सें जानै छै। कारण तें एक्के छेलै कि चटिया के गलती भले कटी-टा के रहें मतुर हुनकों दंड सब गलती लेली एक्के किसिम के हुवै ।

पहलें हुनी चटिया कें मुर्गा बनावै आरो जखनी बच्चा टाँगी में मूड़ी घुसैलें अपनों दोनो हाथ पीछू घुमाय कें कान पकड़लें रहै, तखनिये केशो गुरु जी ओकरों पीठी पर सटाक-सना खजूरी के छड़ी पटकी दै आरो जेन्हैं चटिया तिलमिलाय कें ऐंठतें खाड़ों हुऐ कि हुनी ओकरों कान धरी कें हेनों जोरों सें अमेठना शुरू करी दै; जेना स्प्रिंगवाला खिलौना में कस्सी कें चाभी भरतें रहै आरो हुनी तब तांय अमैठत्हैं रहै, जब तांय कि बच्चा निसुआय कें बेहोश होय के इस्थिति में नै आवी जाय। बच्चा कें कानै के छूट गुरु जी तरफों सें नै छेलै, यै लेली कान अमेठलों जाय वक्ती बच्चा अपनों मुँह दरदों सें जत्तें खोलें पारै, तें खोलै मतर चीखै नै। जखनी कोय चटिया कें केशो गुरु जी सजाय दै, तखनी ओकरा कोय अलग जग्घों मे नै लै जाय मतुर सब लड़का के बीचों मे दै ताकि ऊ सजाय देखी कें आरो बच्चा भूलों सें होनो गलती नै करें। मुदा बच्चा तें बच्चे छेलै, गलती होइये जाय आरो केशो गुरु जी के तै करलों दंड शुरू होय जाय।

हों, बेसी गलती पर हुनी बेछूट छड़ी साथें डस्टरो के प्रयोग करै में नै चुकै। खास करी कें भोलू पर तें हुनकों नजर बेसिये कसलों रहें।

एकरों कारणो खास रहै। भोलू कें चुट्टी काटै में एक तरह से महारथ हासिल होय गेलों छेलै। ओकरा केकरों ध्यान सें पढ़वों कुछ बेसिये अखरी जाय। एकरों एक्के कारण छेलै कि पढ़ै-लिखै में ओकरा मोंन नै लगै। है बात नै छेलै कि ऊ पढ़ै-लिखै में भुसगोल छेलै। जे चीज वैं मनो सें पढ़ी लै—ओकरा भुलवो नै करै छेलै। मतर केशो गुरु जी ओकरों कत्तो कान अमैठै कि खजूरी छड़ी सें सिटपिटाय दै, ऊ निसुआय कें रही जाय मतर इस्कूली बच्चा सिनी साथें पहाड़ा आकि कोय कविता घोकवों ओकरा एकदम अच्छा नै लगै—तें गुरु जी के मार उठौनों-नाँखी बँधले रहें।

भोलुओ मानी लेलें छेलै कि वैं आरो चटिया साथें पहाड़ा घोकें कि नै घोकें, मार तें ओकरा पड़न्है छै। से वैं मार सें बचै के जग्घा मे अपनों पीठ कें ही कछुआ हेनों कड़ा बनाय लेलें छेलै कि गुरु जी कत्तो पीटें, वैं सब सही लें । ई देखी कें केशो गुरु जी कें अचरजो हुवै मतर हुनियो जेना अपनों जिद पर अड़लों छेलै कि मार सें हुनी भोलू कें सुधारिये कें रहतै—से आबें हुनी छड़ी छोड़ी कें डस्टर सें भोलू कें पीटना शुरू करी देलें छेलै।

भोलू पर गुरु के ई अत्याचार के बात ओकरों घोंर तांय नै पहुँचै, से बात नै। कै दाफी लड़के सिनी नुकी-छिपी कें ओकरी माय दूगच्छीवाली कें खबर करी आवै कि भोलू कें गुरु जी खूब पीटी रहलों छै। मतर भोलू के माय इस्कूल केना जैतियै, जैतियै तें भोलू के बाबू रामोतारेनी ।

आरो रामोतार के ई विश्वास कें कौने डिगावें पारतियै कि जे बच्चां गुरु जी के मार नै खैलकों ओकरों नसीबों सें सरस्वती माय दस बाँस दूरे रहै छै। गुरु जी के मार, मार थोड़े होय छै; ऊ तें अछरकटुओं लें भगवानो के प्रसाद बुझों।

एक-दू दाफी दूगच्छीवालीं रामोतार सें कहलो छेलै मतर एकरों असर उलटे होलों छेलै। हुनी भोलू कें बोलैलें छेलै आरो कुछ कहै के पहले धुनाठी देलें छेलै। मोंन भरी धुनाटला के बाद कहलें छेलै, आयकों

बाद जों कभियो गुरु जी के शिकायत माय लुग करलैं, तें सोची लियें कि देहों के एक्को हड्डी सलामत नै रहतौ।''

जखनी ऊ बाबू सें पिटाय रहलों छेलै, तखनी दुगच्छीवाली घरों सें बाहर छेलै। से वैं ई बात जानै नै पारलकै कि भोलू के चेहरा एत्तें मुरझैलों कैन्हें छै ? ऊ कानी तें नै रहलों छेलै मतर रुक्खा गालों पर सुक्खा लोरों के निशान अभियो छेलै। मांय एक दाफी पुछलें तें जरुरे छेलै मतर ओकरा सें कुछ उत्तर नै सुनी कें दोबारा नै पुछलकै। मैंइयो ई बात कें जानी लेलें छेलै कि इस्कूली में गुरुजी मार कि घरों में बाबू के डाँट, ई बात वैं हमरा कहियो नै बतैतै। जे गुरु जी के मार नै खैलकों ओकरा सें सरस्वती माय दस बाँस दूरे रहै छै—ई बात गुरुओ जीं एकदम मनों सें घोकी लेलें छेलै; जेना, भुसगोल चटिया कोय खोड़ा कें रट्टी लै छै।

आरो दस बाँस के दूरी कें कम करै लेली हुनी भोलू के छोटों-सें-छोटों भूलों पर बड़ो-सें-बड़ों दंड दै में नै हिचकिचावै।

हौ दिन तें गजबे होय गेलै। शनिच्चर के दिन छेलै यै लेली इस्कूल में जल्दिये छुट्टी होतियै। से सब लड़का जल्दी-जल्दी सिलोटी पर देलों टास्क कें लिखवो करी रहलों छेलै मतर एक भोलू छेलै कि रही-रही कें घुमनियावें लगै। कारण ई छेलै कि राती देर तांय ओकरों बाबूं अपनों साथ बैठैले रखलें छेलै। पढ़ें कि नै पढ़ें, यै सें कोय मतलब नै छै। मतलब एतने बात सें छेलै कि नै माय लुग जल्दी जैतै, नै माय सें एकरों-ओकरों शिकायत करतै। देर से रात में सुतै लें तें गेलै मतर उठना तें छेलै भोररिये। ओकरों फोंल छेलै कि रही-रही ऊ पाठ लिखतें घुमनियावें लगें। यहू बात नै कि ओकरा मालूमे नै रहै—गुरु जी ओकरा जरूरे घुरतें होतें, मतर वैं करतियै तें करतियै की ? ओकरों नीन तें तबें एकदम्मे सें टूटी गेलों छेलै, जबें गुरु जी के डस्टर ओकरों पीठी पर खट-सना बजलों छेलै। भोलू एक दाफी तें जोर सें छलमलैलै मतर छनै में ऊ इस्थिरो होय गेलै।

पहिलों दाफी वैं गुरुजी दिस तनलों आँखी सें देखलें छेलै आरो

ई किसिम सें देखलें छेलै कि गुरु जीं ओकरों माथा पर चोट करै लें डस्टर उठैलें छेलै कि भोलू बचाव में अपनों सिलोट माथा के ऊपर करी लेलकै। ई सब एतना जल्दी में होलै कि नै जानौं केना डस्टर छिटकी कें गुरु जी के माथा सें लगलै आरो उछली कें एक कोना में जाय गिरलै। फेनु की छेलै, गुरु जी तें विंडोवों में ताड़ों पत्ता-नाँखी डोलें लगलै। हुनी गोस्सा मे डस्टर लै लें ऊ कोना दिस धतपतैले बढ़लै।

भोलू कें समझै में देर नै लगलै कि आय ओकरों हड्डी-पसली एक करी कें राखी देतै, गुरुजी। से ऊ खिड़की पर लात रखी सीधे बाहर कुदकी गेलै, सिलोट कें वहीं ठां छोड़ी कें। दरवाजा सें ऊ भागें तें पारतियै नै, कैन्हें कि हुन्नै गुरुजी डस्टर लै लें गेलों छेलै। धम्म-सना आवाज होलै, तें गुरुओ जी के ध्यान खिड़की दिस गेलै आरो तखनिये भोलूओ के जग्घो पर। वहाँ पर ओकरा नै देखी, पाँच चटिया कें ओकरों पीछू दौड़ाय देलकै मतर भोलू तें चीते नाँखी इस्कूलों के हाता सें की, बस्तियो सें बाहर होय चुकलों छेलै। जबें पाँचो चटिया खाली लौटलै, तें पाँचो के कान, एकेक करी कें गुरु जीं मोचारलें छेलै, ई कहतें—खाली पुल्ली-डंडा खेलै छै; विहाने उठी कें दौड़ै के अभ्यास होतियौ, तें भोलुआ छरबिन्न हुए पारतियै ?

फेनु अपनों कुसी पर बैठतें हुनी गुरगुरैलों छेलै, "मतुर ऊ भागी कें जैतै कहाँ! घरे नी! कल विहानै ओकरा ओकरे घरों पर ठीक करवै; वहू ओकरों मैये-बाबू के सामनाहै में।" अभी छुट्टी के घंटी बजै में आधों घंटा देरिये छेलै मतर गुरुजी नें वही गोस्सा में एक चटिया कें छुट्टी के घंटी बजाय लें बोललै। घंटी बजना छेलै कि सब अपनों-अपनों बोरिया आरो सिलोट लेलें सीधे दरवाजा सें बाहर निकली ऐलै। आय छुट्टी होल्हौ पर कोय हल्ला-गुल्ला नै करी रहलों छेलै, आन दिना नाँखी।

"दिन के दू बजी रहलों छै आरो भोलू अभी तांय नै ऐलों छै। आय शनिच्चर छेकै, छुट्टी तें एक्के बजे होय गेलों होतै ।" दुगच्छीवालीं रामोतार लुग आवी कें बोललै।

''आवी जैतै। कोंन तोरों बेटा सुपुत्तर छेकौं कि इस्कूल खतम होथैं सीधे घोंर आवी जैतै। कहीं पुल्ली-डंडा जमैते होथौं। जा, हमरों माथों नै खा! कचहरी के काम छेकै। जरियो-टा उलट-फेर होय जाय, तें सीधे डिसमिस।'' कही कें रामोतार भनभनैलें चौखट पार करी ऐंगन आरो फेनु ऐंगन सें बाहर निकली गेलों छेलै।

''आबें वैं की करें'' दुगच्छी वालीं मने-मने सोचलकै, ''जरूर इस्कूली में हेनों कोय बात होय गेलों होतै, जेकरों कारण ऊ अभी तांय घोंर नै लौटलों छै, तें की इस्कूले जाय कें गुरु जी सें पूछी अइयै। यहा ठीक होतै, कैन्हें कि भोलू-बाबू जबें कचहरी सें लौटतै, तें सब बात सुनी कें यहा कहतै—जबें एत्ते अबेर होला के बादो ऊ नै लौटलै, तें इस्कूल जायकें नै पूछें पारै छेलौ—मनों में ई बात उठथैं वैं अँचरा कें कपारों तक सरकैलकै आरो लंबा डेग मारतें दुआरी के बाहर आवी गेलै। ऊ इस्कूली दिस बढ़वे करतियै कि ओकरा घरों के पिछुवाड़ी में कुछ तेज सरासराहट सुनाय पड़लै।

''कहीं भोलुए तें कुछ हेनों-होनों करी कें, डरों सें पिछुवाड़ी में नै नुकैलों छै ?'' मनों में ई शंका उठथैं ऊ मलकी कें पिछुवाड़ी दिस बढ़लै। देखै छै भोलू तें नै छै, ओकरों दू साथी नरैठों के पीछू छुपलों बैठलों छै। भोलू माय कें पहचानै में कटियो-टा दिक्कत नै होलै। ई तें घोल्टी, पलटी दोनो जुड़वां भाय छेकै—भोलू के पकिया दोस्त।

दोनों कें देखथैं दुगच्छी वालीं पुछलकै, ''आरो भोलू कहाँ छौं?'' तें घोल्टी सब बात भय आरो घबराहट में बोली गेलै । आखिर में यहू कहलकै कि कल गुरु जी घरो पर आवी कें ओकरा पीटतै। बस यही बतावै लें हमरा दोनो यैठां, सब्भे सें नुकाय कें, आवी गेलों छियै कि कलकों भरी ऊ घर में नै रहें; कहीं नुकाय जाय!

''मतर ऊ तें अभी तांय घोंर ऐलै नै छै। आखिर ऊ गेलै कहाँ! की तोरा दोनों कें वैं कुछ बतैले छौं ?''

''नै, ऊ जे भागलै, तें फेनु भेंटे कहाँ छै। जों होतियै तें हम्में यहां ऐतियै कथी लें।! हों परसुके तें बात छेकै, हमरा ऊ बोली रहलों

छेलै कि हमरा इस्कूली में गुरु जी तें मारवे करै छै, घरों में बाबुओ छोटों-छोटों गलती पर कान चाभी नाँखी एकदम सें घुमाय दै छै। अबकी हमरा गुरु जी के कहला पर जों बाबू जी पीटतै नी, तें घरों के वही कोठरी में नुकाय जैवै, जैमें भूसोवाला बोरिया के मचान छै—कोय खोजो नै पारतै। गुल्टी नें है बात हेनों फुसफुसाय कें आरो दू कदम आगू बढ़ीये कें कहलें छेलै, जेना ओकरा डोंर रहें कि ओकरों बात कोय कहूँ छिपी कें सुनतें न रहें।

हुन्नें गुल्टी कें मुँहों सें भुसखारी कोठरी के बात सुनना छेलै कि ओकरा सें आरो कुछ जानले बिना दुगच्छी वाली सीधे अपनों ऐंगना दिस झपटली भागली। ओकरा हठासिये ख्याल आवी गेलों छेलै, पिछलका इंजोरिया राती के घटना। रसोई वास्ते जारन के जरूरत छेलै, तें भुसखारियेवाला कोठरी जाना छेलै। जारन वास्तें लकड़ियो वही कोठरी में रहै। केबड़ा खोली अभी वैं लालटेन के रास उसकैले छेलै कि भूसा के बोरिया पर लंबा करैत भेड़ियैलों छत्तर काटी रहलों छेलै, देखत्हैं ऊ हडबड़ैले बाहर निकली गेलै।

बहुत खोजबीन के बादो ऊ खरीस नै मिललै। आय वही कोठरी में नुकाय के बात सुनी कें ऊ बदहवासिये में ऐंगनों दिस झपटली । जे ऐंगनों वहाँ सें पहुँचौ में कम-सें-कम पचास कदम चलै लें लगतियै, वहाँ ऊ बीसे-पच्चीस डेगों में पार करी गेलै आरो हफसली-धपसली भुसखारीवाला कोठरी में हड़बड़ाय कें झिंझरी खोली घुसी गेलै। नजर चारो दिस दौडैलकी मतर भोलू कन्हौं नै दिखैलै।

''जरूरे बोरिया सिनी के पीछू घुसियाय कें बैठलों होतै'' सोची कें वैं छल्ला लगलों भूसा के बोरिया बीचे सें खींचना शुरू करलकै। ओकरा की मालूम छेलै कि भोलू बोरिया सिनी के पीछू नै, सबसे ऊपरलका बोरिया पर मूँड़ी गाँतलें बैठलों छेलै। आबें बीचे के एक बोरा जेना खिंचैलै, ऊपरलका बोरा सिनी हेनों ससरलै कि मुन्हा पर बैठलों भोलू ससरी कें सीधे नीचें आवी गेलै। अभी भोलू उठी कें अपनों कुछ सफाई देतियै कि ओकरी मांय ओकरों गल्ला सें लगाय कें बच्चे-रं

कपसी-कपसी कें कानें लगलै। माय कें कपसतें देखी भोलुओ जो-जोर सें कानें लगलै।

ई देखी दुगच्छीवाली तुरत अपनों आँखी के लोर अपनों अँचरा सें पोछलकी आरो भोलू कें गोदों में लेलें ऐंगन चल्लों ऐली। गोधूली बेरा होइये चल्लों छेलै। वैं वहीं पर खटिया बिछैलकी आरो भोलू कें खटिया पर बैठैतै कहलकी, ''आय सें तोरों इस्कूल जाना बंद। नै पढना छै, हमरों भोलू कें । नै बनना छै कचहरी के हाकिम-हुक्काम!'' कही कें अपनो खटिया पर बैठी गेलै।

भोलू कें समझै में नै ऐलै कि आखिर माय हेनों कैन्हें बोली रहलों छै! माय तें हमेशे यही कहतें रहलों छै कि हमरों बेटा चपरासी-किरानी नै, हाकिम-हुक्काम बनतों; फेनु आय हेनों कैन्हें बोली रहलों छै ? ई बात सोचत्है ऊ बितलों सब्भे बात छन्है में भुलाय गेलै आरो माय के ठेहुनों झोलतें पुछलकै, ''तोहें आय हेनों कैन्हें बोली रहलों छैं माय; की आय सें हम्मे नै पढभै?''

भोलू के बात सुनी कें ऊ एक पल तें चुप्पे रहलै मतुर जल्दिये बोललै, ''ई तें हम्में बादों में कहभौं, पहिले तोहें ई बतावों कि तोहें इस्कूली में हेनों आय की करलौ कि तोरा झड़ोखा छड़पी कें भागै लें पड़लौं?''

भोलू समझी गेलै कि माय कें सबकुछ मालूम होय गेलों छै, से वैं सबकुछ सच-सच बताय वैमें ही अपनों नफा बुझलकै, नै तें बाबू के जानला पर जे नुकसान होना छै, ओकरा तें कहनै मुश्किल। मइये ऊ विपत्ति सें बचावें पारें। से वैं फैलाय कें बात बताना शुरू करलकै कि केना वैं बाबू के जेबी सें अठन्नी निकाली लेलें छेलै, तें घरों में बाबूं जत्तें पिटलकै, ऊ तें तोहें देखलें छेलै; इस्कूलियो में गुरु जी के नगीच हमरा जेबकतरा कही-कही कें धुनाटलें छेलै आरो गुरु जी सें कहलें छेलै, ''ई चोरों कें जेना सुधारों पारों, सुधारों; चौर की बिना चोटे चमकै छै?''

ऊ दिन तें नै, तेसरों दिन गुरुओ जी वहा बातों कें लैकें हमरा

पिटलें छेलै—जेबकतरा कही-कही। आरो ऊ जे लपटोलिया के ऐजू-बैजू छै; दोनो कें जानवे करै छैं, कत्तें बदमाश छै। वहा दिन सें हमरो नाम नै लैकें जेबकतरा कही-कही बुलावै। देखा-देखी आरो-आरो दोस्त हस्सी में कहें लगलों छेलै। आबें तोही कहें, इस्कूली में हमरों मोंन की लगतै; केना पढ़ै में मोंन लगतै? फेनु ऊ दिन हमरों की गलती छेलै कि बाबू खटिया के नीचे ओत्तें देर लेली खड़ा करी देलकै, तें इस्कूली में नीन आवें लगलै। नीन आवें लगलै, तें नजर पड़त्हैं गुरु जी डस्टर लैके मारै लें उठलै आरो हम्में जेन्हैं कें मार खाय सें बचै लें हाथ बढ़ैलियै कि नै जानौं हुनकों डस्टर केना कें हुनकों हाथों सें छुटी गेलै। छुटी गेलै, तें हुनकों गुस्सा आरो बढ़ी गेलै। हुनी डस्टर लै लें झपटलै। हम्में समझी गेलियै, आबें हमरों निनौन छै, से सिलोट छोड़ीये कें झड़ोखा लांघी गेलियै। सरपट भागतें बंसबिट्टी में नुकाय गेलियै। जबें ऐजू-बेजू, जे हमरा पकड़ै लें दौड़लों छेलै, हारी-पारी लौटी गेलै, तें हम्में चोराय कें भुसखारीवाला कोठरी में नुकाय गेलियै।''

भोलू के सबटा बात दुगच्छी वालीं बड़ी धीरज सें सुनलें छेलै आरो ओकरा कस्सी कें छाती सें सटाय लेलें छेलै—अपनों आँखी आरो करेजों कें एकदम काठ करतें।

ऐजू-बैजू के हौ रं दौड़ैला के कारण भोलू जबें भुसखारी घरों में बोरिया के छल्ली पर नुकैलों होतै तखनियो ओकरा जरुरे नीन ऐतें होतै, यहीं सें ऊ संभलें नै पारलै, तें ससरी कें नीचें आवी गेलों छेलै आरो जबें ओकरा मांय फेनु छाती सें लगैलकै, तें कखनी ओकरों आँख लगी गेलै ओकरो पतो नै चललै मतुर दुगच्छीवालीं जरूरे ओकरों साँस आरो ढीला पड़तें देह-हाथ सें बुझी गेलै कि भोलू सुती रहलों छै। से आहिस्ता सें भोलू कें लेलें ऊ खटिया सें उतरलै आरो ओकरा अपनों बिछौना पर सोलाय ऐलै।

ठीक तखनिये रामोतार गोड़-हाथ पटकलें डेढ़िया पार करलें ऐंगनों घुसलें छेलै आरो फाइल ऐगन्हैं में बिछैलों खटिया पर फेंकतें बोललै, ''पता चललौं कि सुपुत्तर इस्कूली में की करी कें ऐलों छौं। गुरु

जी के हाथों सें डस्टर छीनी कें बाहर फेंकी देलकौं। आबें एकरा सें बढ़ी कें एकरों बदमाशी की हुएँ पारें। अभी तक तें नै ऐलों होथौं? ऐथौं केना कें। आबें दौ, आय ओकरों देहों के एकेक हड्डी के खबर लै छियै।''

रामोतार के बात खतम होना छेलै कि दुगच्छीवाली गोस्साहै में भुसखारी घरों सें झपटी कें एकटा छोटों रं नरेठों लै आनलकी आरो भोलू-बाबू के हाथों में थमैतें बोललली, ''ऊ जेन्है कें घोंर चढ़ै, आय जी भरी कें तोहें बेटा कें पीटी लियो मतर है जानी ला—कल सें भोलू इस्कूल कभियो नै जैतै आरो इस्कूल जाय लें तोहें ओकरा एक छड़ी भी नै लगावें पारों!

भोलू-माय के ई बदललों रूप देखी कें रामोतार के मगज जे अभी-अभी काफी गरम छेलै, हठासिये ठंडा पड़ी गेलै। नरम पड़तें बोललै, ''एत्तें गरम कैन्हें होय रहली छों; हम्में तें यै लेली पुछलियौं कि नै ऐलों होतै, तें खोजै लें निकलवै कि आखिर इस्कूली सें भागी कें ऊ गेलै कहाँ।''

''कहूँ नै गेलों छै, ऊ घरों में छै आरो सुतलों छै। आखिर तोरा आरो गुरु जी कें ओकरों जान-प्राण सें कोय मतलब छौं की नै ? जखनी मोंन होय छौं, बैल-बोतू समझी कें डँगाय दै छौ। बाप मारै छै, तें समझें पारै छियै मतर गुरु जी केकरों इशारा पर एकरा सिटपिटैतें रहै छै—तोरे इशारा पर नी?'' भोलू-माय के बोली ऊँच्चों होलों जाय रहलों छेलै, तें रामोतार आरो नरम होतें बोललै, ''अरे हौले बोलों नी। हमरा मालूम होलों छै—गुरु जी एकरे खोजों में निकललों छै, हुएँ पारें, यहीं आवी जाय—ई सोची कें कि भोलू घरे में सुटियैलों होतै।''

रामोतार कें की मालूम छेलै कि गुरुजी हुनका इस्कूलिये सें ऐतें देखी लेलें छेलै आरो अपनों बोकड़ी लाठी लैकें हुनके घोंर दिस बढ़ी गेलों छेलै।

कहै के तें रामोतार कही गेलै मतर दुगच्छीवाली के माथा पर तें जेना भगत आवी गेलों रहें । भोलू-बाबू के बात सुनी फेनु सें बोलना

शुरू करी देलकै, ''आवौ नी आय, हुनियो बुझी लेतै कि गरीब-गुरबा के बच्चा बुझी बच्चा कें चुरते रहवों के की परिणाम हुऍ पारें!''

''तोरा जत्तें बिख बोकरना छौं, रात हुऍ दौ, बोकरतें रहियों । इखनी जों गुरु जी हठासिये आवी गेलै, तें हम्में कहीं के नै रही जैवों। गाँव भरी में कुकहारों मचतै कि रामोतार के कनियैनी नें सबटा नीपी-पोती कें राखी देलकै।'' रामोतार नें अपनों दोनो हाथ सें चूल नोचतें कहलकै।

''जे मचना छै, मचै लें दौ मतुर हमरा जे बोलना छै, ऊ आय तोहें सुनी ला। तोरा मालूम छौं, तोरों अवतारी गुरु जी तोरों बेटा कें केन्हों-केन्हों सजाय देतें ऐलों छौं ? कभी रौदी में खडा करी दै छौं; कभियो सब लड़का के बीचों में कान पकड़लें गर्दन झुकैलें बेंची पर; कभियो काने पकड़लें सौ दाफी उठकी-बैठकी करावै छौं आरो ई सब होय छै तोरों कारण, कैन्हे कि तोरों हिसाब सें गुरु जी सें दंड पैवों, शिक्षा पावै के रस्ता होय छै। अरे है नी कहों कि नै तें तोहें बच्चा कें पढ़ावै के तरीका जानै छौ, नै गुरु जी कें पढ़ावै के लूर छै। बच्चा के साथ घंटा भरी के बातचीत सें सौ ज्ञान देलों जावें सकें आरो अच्छा माय-बाप, गुरु जी यहा करवो करै छै। बच्चा कें मारै के मतलबे छै कि गुरु कें पढ़ाय सें कोय वास्ता नै छै। है कैन्हे नी बुझै छौ कि हमेशे दंड के सहारा लेवों, अपनों कम जानकारी कें छिपावै के रस्ता होय छै। आरो है तोहें सुनी ला; भोलू के दोस्तों सिनी सें सब बात सुनी कें हम्में दियोर त्रिलोकी जी सें मिललों छेलियै।''

''की तोहें त्रिलोकीनाथ दिवाकर के बात करी रहलों छौ ?''

''हों, हों, आबें ते हुनियो वकील बनी गेलों छै। छुट्टी में घोंर ऐलों छेलै, तें हम्मू हुनका कन पहुँची सब बात बतैलियै कि केना भोलू कें बिना कारणे एकरों गुरु जी सिटपिटैते रहै छै । होना तें गेलों छेलियै दोसरों इस्कूल कें बारे में जानै लें मतर सब बात सुनी कें त्रिलोकी बाबूं घंटा भरी हमरा समझैतें रहलै कि भोलू वहा इस्कूली में पढ़ते; काँही नै जैतै। जैतै भोलू के गुरुजी—वहू की घोंर नै; सीधे जेल । गुरुआई के

नौकरी तें जान्है छै। आरो फेनु हमरा कानून कें कत्तें-कत्तें नियमो बतैलकै। हमरा रस्ता मिली गेलों छै। सुनों भोलू के बाबू, हम्में कल्हे फेनु त्रिलोकी बाबू सें मिलैवाला छियै। हम्में अदालत में तोरों अवतारी गुरु जी कें ठाढ़ों नै करवाय देलियौं, तें हम्मू दुगच्छीवाली नै!''

''तोरा पर कुलदेवी सवार होलों छौं की ? अनाप-सनाप बकले जाय रहलों छों। जों गुरुजी आवी गेलै तें .....।''

कि तखनिये दुआरी पर खड़ाऊँ के चट-चटवाला आवाज होलै।

आवै के तें गुरु जी कखनिये आवी गेलों छेलै—बस दुआरीये सें दोनो के बतकही सुनी रहलों छेलै। हुनी सोचलो नै छेलै कि भोलू के माय ई हद तांय उतरै पर उतारू छै । अपनों बहुत कुछ भला-बुरा सोची कें हुनी बिना देर लगैले लौटी पड़लों छेलै।

लौटै में ही केन्हौ कें हुनकों गोड़ डगमगैलै आरो बोकड़ी लाठी चौखट सें जाय लगलै, तें खट-सना आवाजो होय गेलै।

आवाज सुनथैं रामोतार नें अपनों मुँहो कें दायां हाथों के पाँचो अँगुरी सें दबैतें दुगच्छीवाली कें चुप रहै के इशारा करलकै; फेनु ई कहतें बाहर जाबें लगलै, ''लगै छै कोय दुआरी पर छै, देखी कें आवै छियौं।''

''तोरा जाय के जरूरत नै छै, हम्मी देखी आवै छियै।'' ई कही ऊ दुगच्छी वाली दुआरी पर पहुंची गेलै आरो वहाँ कुछ देर लेली ठाढ़े रहलै। फेनु लौटी कें रामोतार कें कहलकै, ''गुरुएजी छेलात। शायत तोरों कुछुवे देर बाद ऐलों होतात। अच्छा होलै कि सब बात हुनी सुनी लेलकात। आबें हमरा इस्कूल जाय के जरूरते नै पड़तै ।''

''तोर्है नै, भोलुओ कल सें इस्कूल नै जैतै।'' रामोतार एकदम झुँझलेलों आवाज में बोलतै।

''आबें भोलू वास्तें तोरा चिंता नै करना छै। भोलू कल सें इस्कूल जैतै।'' कही कें दूगच्छीवाली अपनों कोठरी में चल्लों गेलै, तें देखै छै कि भोलू केबाड़ी सें सट्टी कें ओकरे सिनी के बात सुनवो करी

रहलों छै । ई देखी ओकरा हँसी आवी गेलै, तें भोलुओ के चेहरा चमकी उठलै।

■■